शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 1 | अंक 17 | उदयपुर गुरूवार 15 सितम्बर 2016 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

हिन्दी विश्व-सौहार्द की भाषा : नारायण कुमार

हिन्दी संस्कृति संस्कार और रोजगार की भाषा : डॉ. सारंगदेवोत

हिन्दी का संवर्धन लोकभाषाओं से : डॉ. भानावत

उदयपुर। पं. जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संघटक साहित्य संस्थान द्वारा आयोजित हिंदी दिवस पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग परिषद के मानद निदेशक प्रो. नारायण कुमार ने मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि आज विश्व-व्यापार को हिंदी की बड़ी आवश्यकता है। इसी कारण दुनियां के कई देशों के लोग हिंदी सीख रहे हैं। विश्व के कई देशों में हिंदी के लिए बड़ा काम हुआ है। विश्व-परिदृश्य में हिंदी के बढ़ते दबदबे के कई दृष्टांतों और उद्धरणों द्वारा नारायण कुमार ने विश्व-परिप्रेक्ष्य में हिंदी के प्रभाव तथा उपयोग को रेखांकित किया और कहा कि हिंदी साहित्य का इतिहास ही लोकभाषा की पीठिका लिये गौरवान्वित है। काका कालेलकर, महात्मा गांधी तथा ग्रियर्सन और मेकाले तक ने लोकभाषा का वर्चस्व स्वीकारते हुए अपनी भाषा को समृद्ध बनाने पर जोर दिया और कहा कि हिंदी हमारी ग्रामदेवी हैं।

विद्यापीठ विवि के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने हिन्दी के बढ़ते वर्चस्व को विस्तार से बताया और कहा कि साहित्य संस्थान की स्थापना ही लगभग 75 वर्ष पूर्व जनार्दनराय नागर ने की थी। वर्षों पूर्व पहलीबार उन्होंने ही विशाल पैमाने पर हिंदी सम्मेलन आयोजित कर पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया था।

लोककलाविद् डॉ. महेन्द्र भानावत ने कहा कि भारतेंदु हरिश्चन्द्र का 'निज भाषा उन्नति' से तात्पर्य लोकभाषाओं के संवर्धन से ही था। आज इस ओर हमें अधिक प्रयत्न करने की आवश्यकता है। लोक भाषाओं का जितना संवर्धन-संरक्षण होगा, हिन्दी उतनी ही फलेगी फूलेगी। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में लोकसाहित्य विषय को लेकर जितना काम हो रहा है वह प्रशंसनीय है किंतु वहां लोक की आधार भूमि नहीं है। इसलिए प्रत्येक प्रांत में लोकसाहित्य विश्वविद्यालय हों और वहां प्राथमिकता के तौर पर लोकसाहित्य शब्दकोश तैयार किया जाय। उन्होंने कहा कि हिन्दी की बढ़ती रफ्तार से अंग्रेजी का भी हिन्दीकरण ही हो रहा है और विज्ञापनों में हिन्दीमय अंग्रेजीकरण सबको सम्मोहित कर रहा है। हिन्दी का फैलाव टाई वाले से लेकर धूल धोने वाले तक देखा जाता है।

विशिष्ठ अतिथि प्रो. माधव हाड़ा ने मुनि जिन विजय तथा बावजी चतुरसिंह के योगदान को याद करते हुए कहा कि हमारी विरासत की पहचान करना अत्यन्त आवश्यक है। भाषाओं को विभक्त रूप से नहीं देखना चाहिए। राजस्थान से गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश या अन्य राज्यों में प्रवेश करते समय यह नहीं पता चलता कि हमारी राजस्थानी दूसरी भाषा में कब बदल गई। भाषाओं की सीमा तय करना उचित नहीं है। लोकभाषाओं की उपेक्षा कर हिंदी को राष्ट्रभाषा नहीं बनाया जा सकता। हिंदी के कारण ही मोरिशस को आजादी मिली।

कार्यक्रम के शुरूआत में पुरुषोत्तम 'पल्लव' ने 'मेरा मन बहुत व्याकुल रहे, हिन्द की हिन्दी त्याग दूजी भाषा क्यूँ अपनावे'.... कविता प्रस्तुत की। साहित्य संस्थान के निदेशक निदेशक डॉ. जीवनसिंह खरकवाल ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि हिन्दी के विस्तार की चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। हमें सिर्फ औपनिवेशिक सोच को बदलना होगा। समारोह का संचालन डॉ. कुलशेखर व्यास ने किया। इस अवसर में हिन्दीसेवी नारायण कुमार, राजस्थानी कवि पुरूषोत्तम पल्लव तथा बाल कथाकार विष्णु भट्ट का विशिष्ट सम्मान किया गया। समारोह में डॉ. मलय पानेरी, डॉ. महेश आमेटा, प्रो. मंजू मांडोत, डॉ. दिनेश तिवारी, डॉ. घनश्याम भीण्डर रमेश जोशी, चितरंजन, मददगार के संपादक उग्रसेन राव, लालदास 'पर्जन्य', लक्ष्मणपुरी गोस्वामी विशेष रूप से उपस्थित थे।

श्राद्धपक्ष में संज्या मंडन

श्राद्ध पक्ष शुरू होते ही कुंवारी कन्याएं संध्या को अपने घरों की दीवाल पर गोबर के विविध अंकन मांडकर उन्हें रंगबिरंगी फूल-पंखुड़ियों से सजाती हैं। प्रतिदिन छोटी-छोटी आकृतियां- एक पछेटा, दो फूल, तीन तारा, चार पत्तल-दोने, पांच पंच ; क्रमशः तिथि के अनुसार संज्या मांडने की संख्या बढ़ती रहती है। अंत में संज्या का पूर्ण रूप 'कोट' बनाया जाकर संज्या की विदाई दी जाती है। विदाई में खापर्‌या चोर, ढ़ोली, हरिजन, मालिन के दृश्य कोट के बाहर नीचे की ओर कई मिथक तथा गीत-कथाएं लिए हैं जिनका ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व अधिक है। राजस्थान से चली यह संज्या हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और नेपाल तक में अपना आंचलिक प्रभाव लिए परिव्याप्त है। **-डॉ. कहानी भानावत**

ख्यात रचनाकारों को गोइन्का साहित्य पुरस्कार

कमला गोइन्का फाउण्डेशन एवं व्यंग्य यात्रा के संयुक्त तत्त्वावधान में वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. कमलकिशोर गोयनका, डॉ. विश्वनाथप्रसाद तिवारी तथा डॉ. कुसुम खेमानी को क्रमशः 'गोइन्का हिन्दी साहित्य सारस्वत सम्मान', 'महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य पुरस्कार' तथा 'रत्नीदेवी गोइन्का वाग्ददेवी पुरस्कार' से सम्मानित कर एक-एक लाख तथा इक्यावन हजार रूपया से पुरस्कृत किया गया। समारोह प्रो. निर्मला जैन की अध्यक्षता में 27 अगस्त को 'त्रिवेणी कला संगम' सभागृह नई दिल्ली में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर फाउण्डेशन के प्रबंध न्यासी श्यामसुन्दर गोइन्का ने स्वागत भाषण के संग संस्था परिचय दिया। उन्होंने बताया कि फाउण्डेशन एक नये पुरस्कार की घोषणा करने जा रहा है जो बंग्ला से हिन्दी एवं असमिया से हिन्दी अनुवाद के लिए दिया जायेगा। पुरस्कृत साहित्यकारों ने आभार व्यक्त करते हुए फाउण्डेशन का भूरि-भूरि प्रसंशा की।

प्रो. निर्मला जैन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में फाउण्डेशन द्वारा राजस्थानी के अलावा कन्नड़ हिन्दी अनुवाद, तमिल हिन्दी अनुवाद, तेलुगु हिन्दी अनुवाद एवं मलयालम हिन्दी अनुवाद के लिए पिछले एक दसक से जो पुरस्कार दिया जा रहा है, वह सराहनीय है। सहसंयोजक डॉ. प्रेम जनमेजय संचालन किया तथा श्रीमती ललिता गोइन्का ने धन्यवाद ज्ञापन किया। समारोह के बाद काव्य-संध्या में संपत सरल, ललित लालित्य, सुमित मिश्रा, दीपक सरीन, शशिकांत शशि, प्रियंका राय तथा श्याम हमराही ने सबको मंत्र-मुग्ध कर दिया। संचालन सुमित मिश्रा ने किया।

स्मृतियों के शिखर (16) : डॉ. महेन्द्र भानावत

विलक्षण प्रज्ञा एवं कौशल के आचार्य हस्तीमलजी

भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत का सर्वाधिक जुड़ाव अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के आचार्य हस्तीमलजी से रहा। उन्हीं की प्रेरणा से उन्होंने अखिल भारतीय जैन विद्वत् परिषद् की स्थापना की। जयपुर में लालभवन स्थित आचार्यश्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार के निदेशक पद पर रहकर वहां संग्रहीत हस्तलिखित ग्रंथों का ठीक से संरक्षण, केटेलोगिंग किया तथा विद्वानों के लिए अध्ययनोपयोगी बनाया।

उन्होंने संघ की मासिक पत्रिका 'जिनवाणी' का वर्षों तक संपादन किया। इसके लेखक मंडल में जैन ही नहीं, जैनेतर विद्वानों को भी जोड़ा। आचार्यश्री के निर्देशानुसार उन्होंने समय-समय पर जिनवाणी के स्वाध्याय (1964), सामायिक (1965), तप (1966), श्रावक धर्म (1970), साधना (1971), ध्यान (1972), जैन संस्कृति और राजस्थान (1975), कर्म सिद्धांत (1984), अपरिग्रह (1986) तथा अहिंसा (1993) विशेषांक के साथ-साथ आचार्य हस्तीमलजी म.सा. के परलोकगमन पर संग्रहणीय (1991) एवं उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर विशिष्ट (1992) अंक विशेषांक प्रकाशित किये। इसका यह प्रभाव रहा कि कई छात्रों ने इनसे जुड़े विषयों को लेकर शोधानुसंधान किया। जैनेतर विद्वान भी जैन-दर्शन, साहित्य तथा संस्कृतिपरक लेखन की ओर आकृष्ट हुए। विश्वविद्यालयों में जैन साहित्य-संस्कृति-दर्शन तथा प्राकृत के विभाग स्थापित हुए।

जैनत्व के प्रतीक 87 ट्रेक्ट्स :

जैन विद्वत् परिषद् के माध्यम से आचार्य हस्तीमलजी म.सा. विभिन्न विद्वानों को एक सशक्त मंच देने हेतु सदैव यत्नशील रहे। जहां उनका चातुर्मास होता, वहां संगोष्ठी का आयोजन किया जाता। भाई साहब ने जगह-जगह ऐसी संगोष्ठियां आयोजित कर विभिन्न विद्वानों से आपसी विचार-विमर्श, मेलजोल तथा लिखने-पढ़ने का सिलसिला प्रारंभ करवाया साथ ही संगोष्ठियों की स्थायी उपलब्धि हेतु महत्वपूर्ण विषयों पर कम लागत की पुस्तिकाएं प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया। आचार्यश्री का इसके पीछे यह दृष्टिकोण था कि जैन-दर्शन की बीरीकियां और खूबियां इतनी उपयोगी तथा विज्ञान-सम्मत हैं कि विद्वानों का उनसे ठीक से परिचित होना जरूरी है। अपने प्रयोगों द्वारा विज्ञान ने जो निष्कर्ष दिये, जैन-सूत्रों तथा ग्रंथों में सैकड़ों वर्ष पूर्व वे सब जानकारियां उपलब्ध हैं। अत: ऐसे ट्रेक्ट्स तैयार करवाये जाये जो कम से कम लागत में सर्वत्र सुलभ हो सके। प्रारंभ में 108 ट्रेक्ट्स निकालने की योजना बनी।

इस योजना का सर्वत्र स्वागत हुआ। खूब सराहना मिली और प्रकाशन के सहयोगी आगे आये। विद्वानों ने भी इसमें खूब रुचि ली। भाई साहब को आगे से आगे विद्वानों तथा सहयोगियों का साथ मिलता गया फलस्वरूप उन्होंने 87 ट्रेक्ट्स प्रकाशित किये जो अपनेआप में बेजोड़ तथा मानक बने। मुझे उन्होंने हर प्रवृत्तियों से जोड़े रखा। फलस्वरूप मैं जैन-लोक में व्याप्त श्रुत साहित्य का विशेष अध्ययन-सर्वेक्षण कर सका। जिनवाणी के विशेषांकों में भी उन्होंने मुझसे लिखवाया और 'धर्मस्थानों का जैन लोकसाहित्य' नाम से ट्रेक्ट भी प्रकाशित किया।

पाली चातुर्मास की याद :

पाली के चातुर्मास में मुझे याद है, भाई साहब दिन को मुझे आचार्यश्री के दर्शनार्थ ले गये। तब आचार्यश्री शीर्षस्थ धनकुबेरों के बीच थे। हमें देखते ही आचार्यश्री ने श्रेष्ठिजनों को इशारा दिया कि वे कुछ ठहर जायें। पहले दोनों विद्वान भाई आ रहे हैं, उनसे बात करली जाय। हम जब आचार्यश्री के पास पहुंचे तो हमें भी आश्चर्य हुआ कि वे श्रेष्ठिजन उठकर अलग जा बैठे हैं। आचार्यश्री ने हमसे कुछ देर तक बातचीत की। बाद में ज्ञानमुनि ने बताया कि श्रेष्ठिजन जौहरी थे। कोई गंभीर मसला चल रहा था। आचार्यश्री ने उन्हें कहा - ''आप लोक तो कंकड़ में हीरा तलाशते हो पर विद्वान सर्वत्र ही ज्ञान की तलाश में रहते हैं। उनका समय बड़ा कीमती होता है और उनकी कलम में समाज को जोड़ने-मोड़ने तथा नया मोड़ देने की अपार क्षमता होती है।''

अल्पवय में विलक्षण आचार्य :

आचार्यश्री विलक्षण प्रतिभा के धनी और कुशाग्र बुद्धि-कौशल धनी थे। उन्होंने विविध धर्मरूपों से मंडे संप्रदायों को इतिहास की कूंची से मंगल-मंडित किया। मात्र दस वर्ष की उम्र में संयम धारण कर सोलह वर्ष की अल्पायु में आचार्य जैसे गुरुत्तर पद पर मनोनीत हुए और बीस वर्ष की उम्र में तो विधिवत आचार्य ही बन गये। आचार्य बनने के बाद भी वे अपने साधुत्व में पूर्णरूपेण कठोर क्रियाशील ही बने रहे। प्रतिष्ठा और यशलिप्सा से कोसों दूर वे सबके लिए सहज बने रहे, इसीलिए उनकी धर्मसभा में सभी जाति के लोग उपस्थित होते। यही नहीं, उनसे व्यक्तिश: भेंट करते और आशीर्वाद स्वरूप चरण-स्पर्श कर नई ताजगी, नई स्फूर्ति और नई ऊर्जा पाकर अपने को धन्य करते।

पीपाड़ का चातुर्मास :

भाई साहब ने पीपाड़ में आचार्यश्री के चातुर्मास में विद्वत् परिषद् की संगोष्ठी रखी। विषय रखा था- 'धर्म को जीवन में कैसे उतारें'? यह संगोष्ठी 16 से 18 अक्टूबर 1986 को थी। इसमें मैंने भी भाग लिया। सुबह की धर्मसभा में जब भाई साहब ने आचार्यश्री से मेरी भेंट कराई तो उन्होंने उपस्थितों के बीच कहा - ''ये नरेन्द्रजी के छोटे भाई महेन्द्र हैं। कलाकार हैं। हर चीज को कलात्मक ढंग से देखने-संवारने की इनकी दृष्टि है। इन्होंने जो लेखन-कर्म किया है वह भी जैन साधना की ही एक पद्धति है। नरेन्द्र-महेन्द्र दोनों भाई समाज की अच्छी सेवा कर रहे हैं।''

मुझे तनिक भी अंदेशा नहीं था कि आचार्यश्री उस सभा में मुझे ही बोलने को कह देंगे। मैं जानता था कि यह समय उन्हीं के व्याख्यान का है और बड़ी संख्या में जो लोग उपस्थित हुए हैं, वे उन्हीं को सुनने के लिए आतुर हैं। तब भी मैंने आचार्यश्री का आदेश पाकर अति संक्षेप में केवल इतना ही कहा कि हम पढ़े-लिखे लोगों का जीवनधर्म उतना परिपक्व और पूर्णगामी नहीं है जितना उन लोकधर्मी जातियों के लोगों का है जो गांवों और कस्बों में समूह रूप में जीवनधर्मी बने हुए हैं और पृथ्वी, आकाश, अगन, वायु, वनस्पति तथा थलीय जीवों में परमात्म रूप को आस्था तथा अनुष्ठानमूलक स्वीकार करते हैं।

वे लोग गिरि कन्दराओं में मौनी बने, धूणियों पर तपते, मंदिरों, मठों, उपासरों, देवरों में आत्म कल्याण करते तथा पैदल परिभ्रमण करते साधुओं के दर्शन-सत्संग द्वारा अपने जीवन के श्रेष्ठत्व को बनाये रखते हैं। पवित्र नदियों, धर्मस्थलों तथा तीर्थों में उनके उमड़ाव को देखने से पता लग जायेगा कि उन्होंने धर्म को अपने जीवन में कैसे उतार रखा है और कैसे वे उनके प्रति समर्पित श्रद्धा विश्वास से अपने को न्यौछावर किये हुए हैं।

आचार्य हस्तीमलजी महाराज भी ऐसे ही श्रेष्ठतम सत्पुरूष थे, जिन्होंने अपना घर-बार, सगे-समधी, भाई-बंधु और सांसारिक सम्मोहन, सबका परित्याग करते हुए लोक एवं आत्म-कल्याण का पथ पकड़ रखा था। सच तो यह है कि हमारी इस प्रांत की भूमि ही एक ऐसी भूमि है जहां संत, सती और शूरमा तीनों का दबदबा बना हुआ है।

रात्रि को आचार्यश्री से हमारी लंबी चर्चा होती रही। दर्शन तो उसके बाद भी भाई साहब के साथ होते रहे। ज्ञान-चर्चाएं भी होती रहीं। यह पक्ष तो उभरा ही कि परमात्म धर्म में महाकवि सूरदास जैसा सर्वस्व समर्पण का अंध-पक्ष ही कारगर होता है। उसमें तर्क-वितर्क-कुतर्क नहीं चलता। पूर्ण विश्वास से ही इष्ट फल की प्राप्ति होती है। बिना विश्वास कोई गठरी खुलती नहीं है और जो गठरी बंद है, बंद ही रहनी है। उसे खोलने का दुष्प्रयत्न भी दुष्प्रभाव ही अधिक देता है।

संत-रत्नों की भूमि पीपाड़ :

लोकजगत में हमें बहुत सारी चीजें सुनने को मिलती हैं। पराशक्तियों से संबंधित चमत्कारी और रहस्यमय चौंकानेवाली बातें सुनते हैं पर उनका समाधान ठीक से नहीं मिलता। सौभाग्य से, निरंतर जानने की जिज्ञासा ने मुझे लोकदेवता कल्लाजी के सेवक संत-प्रवर सरजुदासजी का सान्निध्य मिला और उन्होंने मुख्यत: मीरांबाई के संबंध में ज्ञातव्य के लिए विभिन्न स्थानों का भ्रमण कराया तो यह तथ्य प्रभावी बना कि मीरां के गुरु रैदास भी उसी पीपाड़ शहर के रहने वाले थे, जहां आचार्यश्री हस्तीमलजी ने जन्म लिया। पूर्व में पीपाड़ का नाम पीपलोदा था।

रैदास ऊंची धोती और मोटे कपडे. की अंगरखी पहनते थे। वे बस्ती के बाहर लूनी नदी के किनारे घासफूस की मामूली झोंपड़ी में रहते जहां आज रेत का टीला खड़ा है। रैदास के साथ ही मीरां ने चित्तौड़ छोड़ा। वाट-गुरू अर्थात् राह-गुरू के रूप में अंत तक ये मीरां के साथ रहे। डाकोर के नरसिंह मंदिर में मीरां ने रैदास को अपना गुरु बनाया। गुरु-प्रसाद के रूप में रैदास ने मीरां को अपना इकतारा दिया और गुरु-दक्षिणा के रूप में मीरां ने उन्हें अपने गले में पहनी तुलसी माला भेंट की।

आचार्य हस्ती की जीवनी 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' के अनुसार कथानक है कि बप्पा रावल के वंशज पीपला रावल ने पीपाड़ बसाया। मध्ययुग में सन्त पीपाजी ने भी इसे धर्मप्रसार का केन्द्र बनाया। अनेक जैनसन्तों एवं आचार्यों ने अपने जन्म, दीक्षा, विचरण और महाप्रयाण से इस भूमि को पवित्र किया। आचार्य हस्ती जिस परम्परा के सातवें आचार्य थे, उस रत्नवंश के मूल पुरुष श्री कुशलचन्दजी म.सा. ने इसी धरा पर जन्म धारण किया। रत्नवंश के चर्चावादी संत एवं सिद्धान्तसार ग्रंथ के रचयिता कनीरामजी महाराज का देवलोकगमन यहीं हुआ। खरतरगच्छीय विलक्षण साध्वी विचक्षणश्री भी पीपाड़ की ही थीं। भाई साहब के साथ मैंने भी इनके दर्शन किये, तब भी जब वे मृत्यु का आलंगन किये हुए थीं पर चेहरे पर वही मुदित मुस्कान और आत्म-विजय का औदार्य था। आचार्य हस्ती के वर्तमान उत्तराधिकारी शिष्य आचार्य हीराचंद्रजी म.सा. भी इसी पीपाड़ के परम पुरूष हैं।

रेत घड़ी से क्रियापाल आचार्य :

आचार्यश्री हस्ती से जब-जब मेरी भेंट हुई, वे अपने में रेत की घड़ी से बंधे कठोर, निज पर शासित अनवरत क्रियापाल लगे। उनमें आचार्य होने का, संघ-सर्वेसर्वा होने का कहीं कोई तिल-चिन्ह नहीं उभरा। बालमन-सी सुकोमल मृदुल मुस्कान के साथ वे इतने सहज होकर मिलते कि मिलने वाला 'बहता पानी निर्मला' होकर ही निखार पाता।

जब-जब भी मैं भाई साहब का स्मरण करता हूं, मुझे आचार्यश्री का स्मरण हो आता है और लगता है वे आज भी अपनी अंगुलियों के स्पर्श से मेरा सिर सहलाते हुए मुझे सुमंगल शुभाशीष दे रहे हैं।

यहीं मुझे आचार्यश्री का वह कथन याद आ रहा है जब विद्वत् गोष्ठी में आत्मा-परमात्मा के स्वरूप को व्याख्यायित करते कहा था- ''आत्मा की कोई जात-पांत नहीं होती। वह किसी वर्ग समाज संघ से नहीं बंधती। यह तो मनुष्य है जो उसे अपने संग जाति धर्म वर्ग सम्प्रदाय का बंदी बनाता है। इस दृष्टि से हमने अपने-अपने ढंग से, उच्च आत्मदर्शी परम जीवधारियों को अपनेपन की पहचान दे रखी है। एक दृष्टि से हमने उन्हें सीमित भी किया है।'' आचार्यश्री के स्वर्गारोहण के पश्चात भी जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ने भाई साहब के साथ पूरा सम्मान का आदरभाव रखा। जब वे जीवन के आखिरी पड़ाव पर थे तब संघ, समाज तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मंडल ने मिलकर उनका बहुमान समारोह आयोजित कर 'साहित्य मनीषी' की उपाधि के साथ एक लाख रूपये का पुरस्कार प्रदान किया।

-शेष पृष्ठ सात पर

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

टाटा पावर को बेची वेल्सपन रिन्यूएबल एनर्जी

उदयपुर। वेलस्पन एनर्जी प्रा.लि. जिसमें कि वेल्सपन इंटरप्राइजेज लि. की 15.49 प्रतिशत भागीदारी है ने वेल्सपन रिन्यूएबल एनर्जी प्राइवेट लि. (डब्ल्यूआरईपीएल) और इसकी इकाइयों को टाटा पावर कम्पनी लि. की इकाई टाटा पावर रिन्यूएबल एनर्जी लि. (टीपीआरईएल) बेचने की घोषणा की। यह बिक्री 9249 करोड़ रुपए में निर्धारित की गई जिसमें कार्यशील पूंजी और नकदी शामिल नहीं है। यह भारत का सबसे बड़ा रिन्युएबल एनर्जी का लेनदेन है।

वेल्सपन ग्रुप के चेयरमैन बी.के. गोयनका ने कहा कि डब्ल्यूआरईपीएल भारत के सबसे बड़े परिचालन पोर्टफोलियो में से एक है, जिसका विस्तार दस राज्यों में है। यह करीब 1,141 मेगावाट रिन्युएबल एनर्जी उत्पादन कर रहा है और इसके पास करीब 990 मेगावाट सोलर पावर प्रोजक्ट और करीब 150 मेगावाट का पवन ऊर्जा प्रोजेक्ट है, जिसमें 1,141 मेगावाट रिन्युएबल एनर्जी पोर्टफोलियो का करीब 1000 मेगावाट क्षमता परिचालन में है शेष क्षमता क्रियान्वयन के अग्रिम स्तर पर है। टीपीआरईएल के पास अपनी इन सभी सम्पदा पोर्टफोलियो के साथ करीब 2,300 मेगावाट निर्माण के साथ भारत की सबसे बड़ी पावर कम्पनी है जिसकी उत्पादन क्षमता 10,000 मेगावाट है।

डॉ. योगानन्द शास्त्री 'संस्कृतिरत्न' अलंकरण से सम्मानित

उदयपुर। राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के संस्थापक पं. जनार्दनराय नागर की स्मृति को चिरस्मरणीय रखने के लिए प्रारंभ किया गया 'जनार्दनराय नागर संस्कृतिरत्न अवार्ड' पुरातत्व विज्ञानवेत्ता डॉ. योगानन्द शास्त्री को प्रदान किया गया। उन्हे प्रतीक चिन्ह, पगड़ी, प्रशस्तिपत्र व एक लाख रूपये की नकद राशि दी गई।

मुख्य अतिथि भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद् (आईसीसीआर) के अध्यक्ष प्रो. लोकेश चन्द्र ने विश्व शांति में बोध धर्म की भूमिका विषय पर अपने उद्बोधन में भगवान बुद्ध के उपदेश एवं बौद्ध धर्म मार्ग को प्रासंगिक बताया। विशिष्ठ अतिथि राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली की प्रो. निर्मला शर्मा ने कहा कि विश्व में शांति बनाये रखने के लिए बौद्ध धर्म की शिक्षा भारतीय संस्कृति, शांति और परस्पर सद्भाव की प्रतीक है।

संस्कृतिरत्न अवार्ड से सम्मानित प्रो. योगानन्द शास्त्री ने कहा कि शिक्षा के कारण ही हमारा देश जगत गुरू कहलाता है। आज पुनः गुरूकुल परम्परा को अपनाना होगा। पं. जनार्दनराय नागर बहुमुंखी प्रतिभा और विराट व्यक्तित्व के पर्याय थे जिन्होंने आम आदमी को शिक्षित करने के लिए भगीरथ कार्य किया। कुलाधिपति एच.सी. पारख, कुल अध्यक्ष प्रो. देवेन्द्र जौहर ने पं. नागर को याद करते हुए उनके बताये रास्ते पर चलने का आव्हान किया।

प्रारंभ में कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने संस्कृतिरत्न अलंकरण की भूमिका और आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि शास्त्री से पूर्व यह अलंकरण जोधपुर महाराजा गजसिंह तथा राजस्थान पत्रिका समूह के डॉ. गुलाब कोठारी को दिया गया। प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि आज विश्व में शांति हेतु भारत अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। संचालन डॉ. हीना खान ने किया। समारोह में प्रो. जी.एम. मेहता, डॉ. प्रदीप पंजाबी, प्रो. सीपी अग्रवाल, डॉ. मंजू मांडोत, डॉ. मनीष श्रीमाली, प्रो. सुमन पामेचा, प्रो. नीलम कोशिक प्रो. जीवनसिंह खरकवाल, डॉ. हरीश शर्मा, डॉ. प्रकाश शर्मा, डॉ. शशि चितौड़ा, डॉ. अमिया गोस्वामी, डॉ. धमेन्द्र राजौरा, डॉ. दिलीप सिंह सहित विभागों के अध्यक्ष तथा कार्यकर्ता उपस्थित थे।

कर्ज का फर्ज

-शिव मृदुल-

अस्सी के दशक की बात है। उन दिनों राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर में प्राथमिक विद्यालयों की पाठ्यपुस्तकों का पुनरावलोकन कार्य चल रहा था। सर्वश्री पुरूषोत्तम तिवारी, श्रीराम द्विवेदी, राधामोहन पुरोहित तथा गोपालप्रसाद मुद्गल संदर्भ व्यक्ति थे। उन पाठ्यपुस्तकों में एनसीईआरटी नई दिल्ली द्वारा निर्धारित निर्देशन बिन्दु के आधार पर राष्ट्रप्रेम, स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि, राष्ट्रीय स्मारकों के रखरखाव तथा महिलाओं के प्रतिनिधित्व सम्बंधी नये पाठ जोड़ने थे।

मैं भी लेखक मण्डल का एक सदस्य था और डूंगरपुर जिले के उ.मा. विद्यालय, सीमलवाड़ा में प्राध्यापक पद पर कार्यरत था। डूंगरपुर के समाज कल्याण विभाग में मेरे पूर्व परिचित साहित्यिक अभिरूचि के परम मित्र हेमन्तकुमार एम. सोलंकी कार्यरत थे। उन्होंने मुझे वहां के गेपसागर की पाल पर लगी आदिवासी वीरबाला कालीबाई की प्रतिमा दिखाई तथा उससे संबंधित घटना का जिक्र किया।

रास्तापाल गांव की यह किशोरी सैंगाभाई तथा नानाभाई की पाठशाला में पढ़ती थी। स्वतंत्रता संग्राम की कहानियां सुनकर उनके मन में देशभक्ति की भावना उमड़ती। सामंती व्यवस्था इस पाठशाला का विरोध कर उसे बंद करवाना चाहती थी। एक दिन सामंत के सैनिक आए। सैंगाभाई तथा नानाभाई ने पाठशाला बंद करने से मना किया। इस पर सैनिकों ने उन्हें रस्सी द्वारा ट्रक से बांधकर घसीटना शुरू कर दिया। कालीबाई खेत से लौट रही थी। उसके हाथ में हंसिया थी। सैनिकों की ऐसी घटिया हरकत देख उसका खून खौल उठा। आव देखा न ताव उसने अपने हंसिये से एक झटके में रस्सी काट दी। सैनिक आगबबूला हो गोलियां बरसाने लगे। कालीबाई शहीद हो गई।

कालीबाई के इस अद्भुत चरित्र ने मुझे बहु प्रभावित किया। मैंने मन ही मन विचार किया कि नवीन मापदंडों के अनुसार कालीबाई के चरित्र पर पाठ तैयार करना सर्वथा उचित होगा। संयोग मानिये कि मुझे जब अगली कार्यगोष्ठी में बुलाया गया तो जीवनी तथा आत्मकथा संबंधी पाठ लिखने को कहा गया।

चौथी कक्षा की हिन्दी पुस्तक के संयोजक गोपालप्रसाद मुद्गल थे। मैंने पाठ लिखा। उसे पढ़ मुद्गल साहब ने मेरी पीठ थपथपाई और कहा- 'गुरुभक्त कालीबाई पाठ पढ़कर तो मेरी आंखें छलछला उठीं।' मेरे लिए यह बहुत ही सुखद क्षण था। मुझे लगा, सीमलवाड़ा की धरती पर मेरा ढाई वर्ष का सेवाकाल रहा। मैंने वहां की हवा में जो स्वांस ली और अन्न-जल ग्रहण किया उसका कर्ज चुका अपना फर्ज पूरा कर दिया।

मेवाड़ के लोकव्रतों के कथाचित्रों का समीक्षात्मक अध्ययन पर शोधानुसंधान

चित्रकला के लोक में कथात्मक लोकव्रत चित्रों की विशेष परंपरा 'थापा' नाम से विख्यात है। इस विधा पर कम ही जानकारी उपलब्ध है लेकिन पहली बार सुखाड़िया विश्वविद्यालय से हंसलता चौहान ने इसे अपनी शोध का विषय बनाकर पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

विषय विशेषज्ञ गाइड डॉ. कहानी भानावत स्वयं ऐसे विषयों पर काम कर चुकी है। उन्होंने कुंवारी बालिकाओं में प्रचलित श्राद्धपक्षीय सांझी उत्सव-अनुष्ठान पर शोधकार्य किया। शीघ्र ही मोलेला की मृण-प्रतिमाओं पर उनकी शोध-पुस्तक आने वाली है। डॉ. कहानी ने बताया कि हंसलता ने मेवाड़ में प्रचलित थापांकनों पर सर्वेक्षणात्मक अध्ययन के साथ-साथ उसके साथ कही जाने वाली कथाओं तथा व्रतानुष्ठानों पर भी समीक्षात्मक दृष्टि से लेखन किया है।

विगत 26 अगस्त को हंसलता की मौखिकी में बतौर परीक्षक आगरा विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग की प्रो. डॉ. इन्दु जोशी की उपस्थिति महत्वपूर्ण रही। इस अवसर पर चित्रकला के जानेमाने अध्येता डॉ. एल.एल. वर्मा, डॉ. रघुनाथ शर्मा, डॉ. विष्णुप्रकाश माली तथा विवि चित्रकला विभाग के डॉ. मदनसिंह राठौड़, साजिद परवेज, अलर्ट संस्थान के जितेन्द्र मेहता तथा निर्मल सोलंकी ने अपनी उपस्थिति द्वारा थापांकन कला और उसकी परंपराजनित प्रासंगिकता पर भागीदारी द्वारा शोधछात्रा के कार्य को सराहा तथा उत्साहवर्धनीय मार्गदर्शन दिया।

मनन चतुर्वेदी मौसमी बीमारियों से प्रभावित क्षेत्रों में पहुंची, बाल-स्वास्थ्य के लिए विशेष चिकित्सा टीमें गठित करने के निर्देश दिए

उदयपुर। राज्य बालसंरक्षण आयोग की अध्यक्ष श्रीमती मनन चतुर्वेदी ने गोगुन्दा क्षेत्र का दौरा किया और मौसमी बीमारियों से प्रभावित क्षेत्रों में पहाड़ी रास्तों से होकर आदिवासियों के टापरों में पहुंच समसामयिक हालातों का जायजा लिया।

उन्होंने मौसमी बीमारियों के कारणों तथा क्षेत्र की स्थितियों के बारे में जनजाति परिवारों के घर-आँगन पहुंच विस्तार से चर्चा की। महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य के बारे में विशेष पूछताछ की। बीमारियों की रोकथाम और इससे प्रभावितों के उपचार और बचाव के ऐहतियाती उपायों को लेकर किए जा रहे लोक जागरण, घर-घर सर्वे, दवाइयों की स्थिति आदि पर ग्रामीणों, अधिकारियों तथा डॉक्टरों से चर्चा की।

गोगुन्दा के पड़ावली कलां गांव पहुंच वहाँ के आदर्श राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में मरीजों से कुशलक्षेम पूछी। चिकित्सकों को हरसंभव त्वरित उपचार की तमाम व्यवस्थाएं बरकरार रखने के निर्देश दिए।

उनके साथ विधायक प्रताप गमेती, प्रधान पुष्करलाल तेली, अतिरिक्त जिला कलक्टर सीआर देवासी, उपखण्ड अधिकारी मुकेश कलाल, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव टांक और अन्य अधिकारी थे।

जनजाति परिवारों से बातचीत कर उन्होंने सामाजिक सरोकारों की सरकारी योजनाओं से लाभ उठाने का आह्वान किया। गोगुन्दा के रेस्ट हाउस में अधिकारियों, जन प्रतिनिधियों एवं ग्रामीणों से चर्चा की। कोटड़ा एवं झाड़ोल क्षेत्र का दौरा करते हुए गोगुन्दा पंचायत समिति के पड़ावली कलां गांव तथा नाल क्षेत्र का दौरा किया और वहां संचालित विशेष चिकित्सा शिविर का अवलोकन किया।

वन संरक्षण एवं संवर्धन कार्य प्रकृति की पूजा : रिणवा

उदयपुर। वन, पर्यावरण एवं खान राज्यमंत्री राजकुमार रिणवा ने वन विभाग में नवनियुक्त वनरक्षकों के लिए खेरवाड़ा के पुलिस ट्रेनिंग स्कूल में चल रहे 90 दिवसीय प्रशिक्षण का अवलोकन कर प्रकृति को भगवान का रूप बताते हुए इसके संरक्षण में वनरक्षकों की महती भूमिका बताई और कहा कि नैसर्गिक संपदा का संरक्षण बेहतर ढंग से निभाएं।

खेरवाड़ा विधायक नानालाल अहारी ने कहा कि इससे हर कार्य में बेहतर परिणाम हासिल होते हैं। आरंभ में वनरक्षक प्रशिक्षण के प्रभारी, उप वन संरक्षक आर.के. जैन ने शिविर की गतिविधियों जानकारी दी। संचालन उमेश बंसल ने तथा आभार ज्ञापन आईपीएस मथारू ने किया।

माता-पिता की सेवा में ही तीर्थ : प्रशांत

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ बड़ी में संस्थान संस्थापक कैलाश मानव के सान्निध्य में चल रहे भजन-सत्संग एवं अपनो से अपनी बात कार्यक्रम में संस्थान संस्थापक कैलाश मानव ने कहा कि मानव को हमेशा आनंद में रहना चाहिए, मानवता को आनंदित करने का मार्ग रामचरित मानस, गीता आदि महाग्रंथों में नीहित है। जिनके हृदय में शांति, सेवा, दया, करूणा का भाव नीहित है उनके हृदय में साक्षात प्रभु का वास होता है। परमपिता परमात्मा में सदा आस्था व श्रद्धा रखें, यही जीवन का आधार बनती है।

अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने कहा कि हमें हमेशा सद्कर्म का मार्ग अपनाना चाहिए, कभी कोई गलत कार्य नहीं करें। हमेशा माता-पिता का सम्मान करें, कभी उन्हें कोई तकलीफ न दें, उनकी सेवा करें, न की उनके चले जाने के बाद उनके सम्मान में भवन आदि का निर्माण कर स्वयं को उनके प्रिय होने का दिखावा करें। अगर आपने सच्चे मन से माता-पिता की सेवा की है, तो समझ लीजीए की आपने सारे तीर्थों की यात्रा कर ली है। कार्यक्रम में संगीत मण्डली ने भजनों की मनमोहक व सुन्दर प्रस्तुतियां दी। संचालन ऐश्वर्य त्रिवेदी ने किया।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 15 सितम्बर 2016

सम्पादकीय

शिक्षा का हालरहूलर

हमारी शिक्षा रामभरोसे झूल रही है और सरकार विकासगामी शिक्षा के आंकड़ों को बढ़ाने के अंदाज में हालरहूलर हो रही है। स्कूल चल रहे हैं। चलाने वाला कोई नहीं है। कई छात्रों के बीच एक शिक्षक है जैसे गांव की सभी गायों के साथ एक ग्वाला होता है। न छात्र शिक्षक को देख पा रहा है न शिक्षक छात्रों को पहचान पा रहा है। हाजिरी सबकी पक्की और हर साल छोरा अगली कक्षा में प्रवेश पाता है। घरवाले खुश हैं। छोरा सातवीं पास होने पर भी सांसद और विधायक कौन होते हैं? मंत्री क्या बला है? मुख्यमंत्री कौन है? प्रधानमंत्री क्या करता है? कहां बैठता है? नहीं जान पाता है और तो और अपना नाम भी शुद्ध नहीं लिख पाता है।

जहां हाईस्कूल भी हिल रहा है वहां सरकार कॉलेज खोल रही है। जहां कॉलेज में पढ़ने और पढ़ाने वालों की कुर्सियां खाली पड़ी हैं वहां खाते पानड़े रजिस्टर कह रहे हैं, विकास की गंगा खलक रही है। जहां पूरे देश-प्रदेश में एक ही विश्वविद्यालय होता था वहां एक-एक शहर में एक-एक दर्जन तक विश्वविद्यालय ऊंट की गर्दन ऊंची किये हैं और हम आजादी के सित्तर बरस बाद भी लार्ड कर्जन का नाम फुसफुसा रहे हैं।

प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के बारे में संसद में पेश रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश की हालत सबसे पतली है। एनसीईआरटी और गैर सरकारी संगठन 'प्रथम' के सर्वेक्षण के अनुसार आठवीं कक्षा में 25 प्रतिशत बच्चे दूसरी कक्षा की पुस्तकें नहीं पढ़ पाते। दूसरी कक्षा के 32 प्रतिशत बच्चे हिन्दी-अंग्रेजी की वर्णमाला ठीक से नहीं पढ़ पाते। पांचवीं के 50 प्रतिशत से अधिक बच्चे बुनियादी कौशल नहीं सीखे जो दूसरी में ही सीख लेने थे। आठवीं के आधे से अधिक बच्चे बुनियादी गणित में भी सक्षम नहीं हैं। शिक्षा के नाम पर निजी स्कूलों की दुकानदारियां बेबस बनी हुई हैं और हम अभी तक शिक्षा को प्रयोगधर्मी बनाने में ही मशगूल हैं।

पत्र-पिटारी

प्रिय श्री तुक्तकजी,

सप्रेम नमस्कार !

पिछले कुछ समय से 'शब्द रंजन' के अंक मिल रहे हैं। रंजन के साथ-साथ पुराने मित्रों के समाचार भी मिल जाते हैं और उधर की खबरें भी। महेन्द्रजी से मिले बरसों हो गये। स्व. नरेन्द्र तथा शांताजी के समय ही उनसे जयपुर में मिलना हुआ था। बाद में भूले-भटके एकाध पत्र के बाद संपर्क टूट गया। इस पत्रिका के माध्यम से उन्हें पढ़कर मिलन-सुख भी जैसे मिल जाता है। आप लोगों से तो कभी मिलना ही नहीं हुआ। अब संभव भी नहीं दीखता। मैं इस वय (93 वर्ष) में निकल ही नहीं पाता और विगत 1 अगस्त 2015 से तो विविध प्रकार के रोगों से जब-तब ग्रस्त होते रहने के कारण अस्पताल ही प्राय: शरणस्थल बना रहा है। आशा है, आप सब लोग स्वस्थ, सक्रिय और सानन्द हैं।

शुभेछु

-डॉ. आनन्दप्रकाश दीक्षित, पुणे

'शब्द रंजन' के 13 वें अंक में जुगलजी जैथलिया पर टीप पढ़ी। उनसे डॉ. महेन्द्रजी भानावत की मुठभेड़ बड़ी रोचक रही। मेरी पुत्रवधू सौ. मंजु महमियां ने कहा - 'प्राय: मेरा स्वभाव शान्त ही है किन्तु किसी से झगड़ा हो जाय तो मुझे पराजित नहीं किया जा सकता।' भानावतजी भी जैथलियाजी से पराजित नहीं हुए। उनके प्रश्नों में अभिमान था, भानावतजी के उत्तरों में स्वाभिमान।

-अम्बू शर्मा, कोलकाता

साहित्यकार राव की मातुश्री का निधन

कानोड़ के हिन्दी-राजस्थानी के सम्मान्य रचनाकार राव श्री भेरूसिंह 'क्रांति' एवं रूपसिंह की मातुश्री मोहन कुंवर धर्मपत्नी श्री देवीसिंह राव 9 सितम्बर 2016 राधाष्टमी के दिन 95 वर्ष की उम्र में दिवंगत हो गयीं। मोहन कुंवर अति मिलनसार, सद्व्यवहारी, मृदुभाषी, पारिवारिक व सामाजिक सम्बंधों का निर्वाहन करने वाली आदर्श महिला थीं। पास पड़ौस, मोहल्ले वाले व सभी कौम के कस्बावासी उनके स्नेहिल व्यवहार से अत्यंत प्रभावित थे। पीहर व ससुराल में उन्होंने बहुत मान पाया।

नाई-नाई बाल कितने?

-हरमन चौहान-

व्यंग्य

हे घोटालेबाजों ! रिश्वते-आजमों ! होशियार ! खबरदार ! हमारा मुल्क, आपका मुल्क। कहने को यहां इन्सानों की ही हुकूमत चलती है। वैसे इस जम्हूरियत में देशभक्त और सच्चे ईमानदार सियासतदा की जरूरत न के बराबर है। यहां तो आप जैसे अहमक सियासतदाओं का बोलबाला है। लोगों का ठेका नियामतदार है। अपने मुल्क में आप जैसे लोगों की ही बेधड़क हुकूमत चलती आई है। चाहे यह पार्टी हो या वह पार्टी। आप कुर्सी पर हो या नहीं, आपकी साहिबी चलती रहती है।

रोकने में तो मैं अकेला ही रोक सकता हूं लेकिन उसके लिए पावर-प्ले चाहिये। जिन्हें जेल जाने की सजा हो गई, वे इक्के-दुक्के गए और फट वापस बाहर। अवाम भी ऐसी है कि आपको ही वोट देकर सिंहासन थमा देती है। फिर वही घोटाले और रिश्वत। गरीब और गरीबों के बच्चों को साइकिल, लोपटॉप, साड़ी, गैस सिलेण्डर आदि देकर मन लुभा दिया जाता है। किसी को बिजली के बिल माफ, किसी को ऋण माफ। गरीबों के गरीबी हटाने के दावे आज तक सभी पार्टियों के गलत साबित हुए हैं। मैं आपको एक बार फिर चेता रहा हूं कि आप अपने हथकंडों से बाज आओ। आप लोगों ने अपनी जमात में अहलकारों, उद्योगपतियों व वजीरों को भी शामिल कर लिया है। आप सीधी तरह से मान जाओ। शियार की मौत आती है तो वह गांव की तरफ भागता है।

मैं आपको बता देता हूं कि हमारे ईसरो के वैज्ञानिक तरह-तरह के अन्वेषण के लिए अंतरिक्ष में राकेट छोड़ते रहते हैं। उन्हें कामयाबी भी शत प्रतिशत मिलती रहती है। एक मिनी राकेटनुमा मशीन लांच हो चुकी है। उससे आपके कारनामें आपकी गतिविधियां, छुपी सम्पत्तियां आदि प्रिंट होकर बाहर आ जाएगी। सरकार के पास मंथन चल रहा है। अब कोई नहीं बच पायेगा। मेरे एक भेदिये ने मुझे यह खबर दी है और मेरा फर्ज बनता है कि मैं राष्ट्रद्रोह के परे जाकर आपको बा-अदब होशियार कर रहा हूं।

हे घोटालेबाजों ! जैसे ही यह राकेटनुमा मशीन अंतरिक्ष में स्थापित होगी, वह तुरन्त आपकी सम्पत्ति कितनी और कहां-कहां पर है, स्वीस बैंक में है या किसी अन्य विदेशी बैंक में, पूरी-पूरी जानकारी अधिकारियों के समक्ष होगी। एक मछली जब सारे तालाब को गंदा कर सकती है तो राष्ट्र के तमाम समंदरों, पोखरों, झीलों, बांधों, तालाबों में कितनी मछलियां गंदगी फैला रही हैं। इनका अब सफाया ही समझो। सरकार कोई कदम उठाये उससे पहले आपको मैं चेता रहा हूं। बाकी तो नाई-नाई बाल कितने कि हुजूर आपके सामने होंगे।

आड़ावल के पांच चित्र

-डॉ. रमेश 'मयंक'-

(1)
मैं वलय पर वलय
आड़े वलय लिए खड़ा हूं
तपसी सा आड़ावल।
झूलती हवा, अंकुरित वन संपदा
चहकती चिड़िया लहराते खेत
आंखें खुली की खुली है मेरी।

(2)
केर-बेर-करौंदे के झाड़ों में
नाचता है मोर।
जब आम-नीम-बरगद-पीपल पर
बादल मंडराता है।
खुशियों का पारावार उमड़ता है।

(3)
मैं जानता हूं-
एकाएक नहीं कटा था जंगल
धीरे-धीरे टूटी टहनियां
कम हुआ तना
उखड़ने लगी जड़ें
जलने लगे ठूंठ
जहां कभी था वन सघन और घना।
मेरे मना करने के बावजूद
कुल्हाड़ियों-आरियों ने कोहराम मचाया
शुरू हो गया दंगल
दनादन कटने शुरू हो गये जंगल
पक्षी जो सुदूर देशों से आते थे उड़ गये।

(4)
बहते रहे नाले
झरते रहे झरने
भरते रहे ताल तलैया।
धानी आंचल सुजलाम
मलयज शीतलाम्
वन्दे अरवलम्।

(5)
खेत ने जपी मेहनत की माला
रांकड़-कांकड़, मालु-मंगरे अमोल हो गये।
कुदाली फावड़ा से सब आंगन शृंगारित हुए
बावजी मावजी महरबान।

लोकगीतों से दूर होते बच्चे

दिल्ली से अंग्रेजी में एम.ए. पास कर आंचल ने अपनी कुछ और साथिनों के साथ बिछीवाड़ा को निवास स्थान बना रखा है। बिछीवाड़ा डूंगरपुर जिले का उदयपुर-अहमदाबाद हाईवे पर आदिवासी बहुल गांव है। यहां के आदिवासी बच्चे लोकगीतों से दूर होते जा रहे हैं। आंचल स्कूल के माध्यम से बच्चों को अपनी परम्परा से जुड़े रहने को संस्कारित करना चाहेगी।

13 सितम्बर को समय लेकर वह मेरे पास आई। पहले उसे सुना फिर मैंने कहा कि बिछीवाड़ा में ही क्यों, पूरे देश के बच्चों की एक सी स्थिति है। बच्चे ही क्यों, उनके परिजनों की भी वही हालत है और क्या तुम स्वयं और तुम्हारे परिजन परम्पराजीवी हैं? लोकगीत गाते हैं? अब समय बदल रहा है। कई गांव तो बड़े बांध और बड़े लेन में बदलती सड़कों के चपेट से उजड़ ही गये हैं। यह बदलाव जरूरी भी है और हम इसे चाहें तो भी रोक नहीं सकते। जब पूरी जीवनधर्मिता ही बदल रही है तो लोकगीत भी नदारद होंगे ही।

आंचल चुपचाप सुनती रही। उसे कोई जवाब नहीं सूझा। लगा, जो कुछ सोच और समझ लेकर मेरे पास आई उसका पटाक्षेप हो गया और महसूस करने लगी कि किसी ने सबसे पहले उसे मुझसे क्यों नहीं मिलाया।

मैंने कहा कि इसके लिए रत्तीभर अफसोस नहीं करना है। सोचना यह है कि फिर भी हमें बच्चों को अपनी विरासत के प्रति सजग कैसे रखना है तो उनके पारंपरिक त्यौहार-उत्सव को टटोला जाय। उनके अभिभावकों से मिलकर उन्हें मोटीवेट किया जाय।

जिसका अभाव है उसकी पूर्ति अपनी ओर से की जाय। लोकगीत गाने, उन्हें एकत्र करने जैसी विविध प्रतियोगिताएं रखीं जाय। गांव का सरपंच और अन्य सरकारजीवी तथा प्रभावी व्यक्तियों के साथ अपनी समस्या रखी जाय और उसके निराकरण के लिए उनके सहयोग की अपेक्षा तलाशी जाय।

इसके लिए शिक्षा संस्थानों तथा अन्य सामाजिक कार्य कर रही संस्थाओं और व्यक्तियों को जोड़ा जाय और उन्हें आगेवाणी कर मात्र दर्शक भाव से यह अवलोकित किया जाय कि हमारे मनोनुकूल कार्य हो रहा है या नहीं। गांववालों को यह नहीं लगे कि बाहरी लोग पता नहीं, क्यों किस प्रयोजन से अथवा स्वार्थवश तो कुछ करना नहीं चाह रहे हैं। कार्य करने वालों को ग्रामवासियों से इतना घुलमिल जाना चाहिए कि वे अपने को पराये रूप में न देखें और न किसी प्रकार का संदेह ही उनमें व्याप्त हो।

फिर आंचल! क्या तुम बिछीवाड़ा छोड़ने के बाद पुन: देखने आओगी कि बच्चे क्या कुछ कर रहे हैं? तुम पता नहीं कौनसी नौकरी में लगोगी, अपना घर भी बसाओगी और यह बात आई-गई हो जायेगी। आंचल कुछ नहीं बोल सकी लेकिन सब कुछ सुनकर वह गंभीर हो गई। मैंने उसे अपनी पुस्तक 'जनजातियों के धार्मिक सरोकार' पढ़ने को भेंट की और कहा कि इसे पढ़ने, फिर मनन करने और फिर हो सके तो अपनी धारणा मुझ तक पहुंचाने को दे रहा हूं। कीमत इसीलिए नहीं ली है।

-म. भा.

'लक्स गोल्डन रोज़ अवार्ड' का शुभारंभ

उदयपुर। हिन्दुस्तान युनिलिवर लि. पर्सनल केयर प्रॉडक्ट और भारत का प्रथम ब्यूटी सोप, लक्स ने एक नए इन्गेजमेंट प्लेटफार्म- 'लक्स गोल्डन रोज़ अवार्ड' के शुभारंभ की घोषणा की। यह समारोह बॉलीवुड के प्रतिष्ठित सितारों की ब्यूटी, स्टाईल और ग्लैमर के जश्न की पहचान है जिसने बड़े पैमाने पर देश और विशेष रूप से इस उद्योग के ट्रेण्ड को आकार दिया है। लक्स गोल्डन रोज़ अवार्ड का उद्घाटन संस्करण नवम्बर 2016 में एक समारोह में प्रस्तुत किया जाएगा।

संदीप कोहली, एक्ज़ीक्यूटिव डायरेक्टर, पर्सनल केयर, हिन्दुस्तान यूनिलिवर लि. ने कहा कि लक्स गोल्डन रोज़ अवार्ड को पेश कर हमें बॉलीवुड के इतिहास में एक नये अध्याय की शुरूआत कर बहुत खुशी हो रही है। हमें लगता है कि देशभर के सिनेमा प्रेमियों को अपनी पसंदीदा बॉलीवुड अभिनेत्रियों को एक शानदार मंच पर उनके सौंदर्य और ग्लैमर को देखना बहुत ही सुखद लगता है। दीपिका पादुकोण ने कहा कि मैं लक्स परिवार से जुड़कर बहुत ही उत्साहित हूं। महिलाओं ने समय के साथ अपने आप को काफी बदल लिया है और लक्स उसी का प्रतिबिंब है। एक ब्राण्ड के रूप में, लक्स का संबंध हमेशा सिनेमा की दुनिया से रहा है और यह पहला ऐसा ब्राण्ड है जिसके द्वारा फिल्म अभिनेत्रियों के सौंदर्य और स्टाईल पर प्रकाश डाला गया है। कई बॉलीवुड अभिनेत्रियों का पसंदीदा ब्राण्ड होने के नाते लक्स अपनी 90 साल की सुंदरता की विरासत को संजोए चला आ रहा है।

किलर शोरूम का उद्घाटन

उदयपुर। फैशन परिधान निर्माता केवल किरण क्लोथिंग लि. ने अपने एक्सक्लूसिव ब्रांड किलर के शोरूम का शुभारंभ अरवाना शॉपिंग डेस्टीनेशन में किया। इसका उद्घाटन वाइस प्रेसीडेंट अनुज गोस्वामी, एरिया सेल्स मैनेजर सोनू शर्मा एवं अरवाना शॉपिंग डेस्टीनेशन के प्रबंध निदेशक हसन आफताब पालीवाला ने किया।

इस अवसर पर अनुज गोस्वामी ने बताया कि उदयपुरवासियों की लाइफ स्टाइल में अब किलर के उत्पाद भी शामिल हो पाएंगे। वस्त्र निर्माण एवं विपणन में पूर्णत: भारतीय कंपनी होकर किलर ब्रांड मल्टी नेशनल कंपनियों के सामने अपनी साख कायम रखे हुए है। किलर युवाओं की मानसिकता एवं आवश्यकता के अनुरुप जींस, शर्ट व जैकेट का निर्माण कर रहा है और किलर्स की शोध एवं अनुसंधान टीम प्रतिवर्ष 500 से अधिक डिजाईनों पर कार्य कर रही है।

सोनू शर्मा ने बताया कि 1989 में कंपनी ने 16 से 35 आयुवर्ग के युवाओं की आवश्यकता, चाहत और फैशन में अद्यतन रहने की आवश्यकता के मददेनजर किलर ब्रांड को बाजार में उतारा था। इस ब्रांड की जींस देश की सवार्धिक बिक्री वाली जींस है जिसे अब डेनिम ब्रांड के नाम से जाना जाता है।

शोरूम के प्रबंधक हुसामुद्दीन वेरडा एवं विपुल पटेल ने बताया कि उद्घाटन अवसर पर कंपनी ने विभिन्न आकर्षक योजनाएं लागू की हैं। इसमें कपड़ों की खरीद के साथ डियो, ट्रॉली बैग भी प्रदान किये जाएंगे।

मोटू पतलू-किंग ऑफ किंग्स 14 अक्टूबर से बड़े पर्दे पर

उदयपुर। भारत के चहेते मोटू पतलू अपनी बड़े पर्दे की पहली फिल्म- मोटू पतलू किंग ऑफ किंग्स के साथ 14 अक्टूबर से बच्चों का मनोरंजन करने आ रहे हैं। वॉयकॉम 18 मोशन पिक्चर्स की

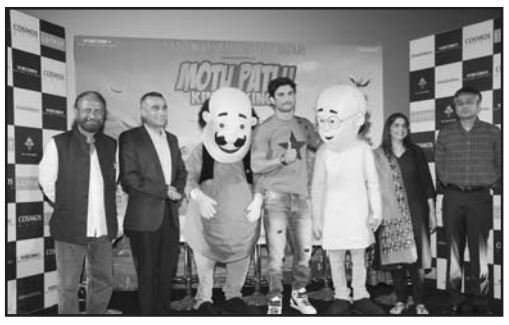

देश में निर्मित यह पहली 3डी स्टीरियोस्कोपिक एनिमेटेड मूवी, लोटपोट के लोकप्रिय किरदारों मोटू पतलू पर आधारित है, जो इस समय निकलओडियन पर दिखाए जाते हैं। अभिनेता सुशांतसिंह राजपूत ने इस मूवी के ट्रेलर लॉन्च के मौके पर मोटू पतलू को उनकी नई इंनिंग शुरु करने पर शुभकामनाएं दीं। सुशांत अपनी बायोपिक फिल्म, एमएस धोनी- द अनटोल्ड स्टोरी में धोनी का किरदार निभा रहे हैं।

ट्रेलर लॉन्च के मौके पर सुशांतसिंह राजपूत ने कहा कि महेंद्रसिंह धोनी युवाओं के लिए आदर्श हैं। मैंने सुना है कि पूरे देश के बच्चों के बीच मोटू पतलू भी काफी लोकप्रिय हैं। मुझे बच्चों के चहेते मोटू पतलू के बड़े पर्दे पर कदम रखने की घोषणा का हिस्सा बनकर बहुत अच्छा लग रहा है। मोटू पतलू ने कहा कि हम इस मैग्नम ओपस 3 डी स्टीरियोस्कोपिक फिल्म के साथ बड़े पर्दे पर आने के लिए बहुत उत्साहित हैं। छोटे पर्दे पर बच्चों ने हमें बहुत पसंद किया है और अब हमारा नया एडवेंचर भी उनका उतना ही मनोरंजन करेगा।

नेशनल अवार्ड विजेता विशाल भारद्वाज एवं गुलज़ार ने इस एनिमेशन मूवी के शानदार ट्रैक का निर्माण किया है।

एमबीजे के ज्वैलरी कलैक्शन 'अदारा' की प्रस्तुति

उदयपुर। भारतीय ज्वैलरी क्षेत्र में ख्यातनाम एमबीजे ने अपने 'अदारा' संग्रह के माध्यम से सिग्नेचर डायमण्ड एवं पोलकी ज्वैलरी का जबरदस्त संग्रह फतहपुरा स्थित क्यू होटल में प्रस्तुत किया गया।

अदारा में प्रत्येक पीस अपने आपमें बेशकीमती है जिसे खूबसूरती के साथ तैयार किया गया है जो कि ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से काफी समृद्ध है और इसमें परम्परागत तथा आधुनिक तत्वों का मिश्रित स्वरूप नजर आता है। ब्राण्ड की शक्ति चुनिंदा डायमण्ड्स और जवाहरात हैं जो एक अनूठे फैशन के लिए सटीक एवं विवेचनापूर्ण हैं। इस कारण हर पीस को असाधारण रूप से ब्राण्ड का प्रतीक चिन्ह के रूप में स्थापित किया है।

एमबीजे के प्रबन्ध निदेशक गौतम सोनी ने बताया कि उत्कृष्टता हमेशा एक नियम रहा है जिसका हम एमबीजे में अनुसरण कर रहे हैं। हमारा लक्ष्य सदैव नवाचारी शैली एवं बारीक कलाकारी, शिल्प और अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी के साथ गुणवत्तापूर्ण उत्पाद पेश करना रहा है। उदयपुर के ग्राहक हमारे जयपुर स्टोर पर नियमित आते रहते हैं साथ ही नवीन कलैक्शन के प्रति हमें उत्साहित करते रहते हैं और इन्हीं के प्रेरणास्वरूप हम झीलों की नगरी में अपनी खास प्रस्तुति पेश कर रहे हैं। हमारी हर ज्वैलरी को हस्ताक्षर एवं कालातीत डिजाइन बनाने का आदर्श सामने रख कर किया गया है। हर ज्वैलरी को ग्राहकों के लिए काफी सावधानीपूर्वक क्यूरेट और डिजाइन किया गया है। पोलकी की पुरानी भव्यता एवं असाधारण डायमण्ड ज्वैलरी ने हमारे इस संग्रह को प्राचीन एवं नवीनता भी सुन्दरता प्रदान की है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पंसद की जाएगी।

एमबीजे भारत का पूर्व प्रतिष्ठित लक्जरी ज्वैलरी ब्राण्ड है, जिसने नवीनतम ब्राइडल संग्रह अदारा पेश किया है। शिल्पकला के समृद्ध अनुभव के साथ वर्ष 1897 से ज्वैलरी फॉर रॉयलिटी पेश करते आ रहे, एबीजे ग्रुप के पास एक अनुभवी शिल्पकारों का समूह कार्यरत है जो बेशकीमती क्राफ्टेड ज्वैलरी पेश कर रहे हैं जो सभी अवसरों पर खास नजर आती है।

आदरा संग्रह के खुबसूरत कड़े, भारी चोकर्स एवं ईयरिंग्स भारतीय एवं पाश्चात्य संस्कृति का संमिश्रण है। इस संग्रह में समकालीन पीसेज भी है जो कि आधुनिकता तथा परम्परागत का उपयुक्त मिश्रण प्रदर्शित करते हैं। सीमित संस्करण के इन पीसेज में मोतियों और डायमण्ड्स से अलंकृत चांदबालाज, झूमर जो कि डायमण्ड के कारण अपनी अलग ही आभा दे रहे है, पक्षियों से प्रेरित पिकॉक कड़े, चंकी कॉकटेल रिंग्स, खूबसूरती से गढ़ी गई ब्रेसलेट्स, हीरे जड़ित चूड़ियां, रूबी, एमरल्ड, मोती और हीरों से विभूषित हैवी चोकर्स प्राचीन युगी की स्मृति कराते हैं।

इलेक्ट्रॉनिका एवं प्रोडक्ट्रॉनिका इंडिया 2016 का आयोजन 21 से

उदयपुर। खोजपरक उत्पाद, समाधान और तकनीकों का प्रदर्शन के लिए इलेक्ट्रॉनिका इंडिया और प्रोडक्ट्रॉनिका इंडिया का आयोजन बेंगलुरू स्थित बेंगलुरू इंटरनेशनल एग्जीबिशन सेंटर (बीआईईसी) में 21 से 23 सितम्बर, 2016 तक होगा। इसमें इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण उद्योग के लिए शिक्षण एवं नेटवर्किंग के ढेरों अवसर मौजूद होंगे। व्यापार मेलों के साथ-साथ होने वाले सम्मेलन, क्रेता-विक्रेता बैठकें, बी2जी मीट्स और भारतीय राज्यों एवं 6 देशों के पैवेलियन के साथ, इलेक्ट्रॉनिका इंडिया और प्रोडक्ट्रॉनिका इंडिया समुदाय के लिए अवश्य उपस्थिति दर्ज कराने वाले कार्यक्रम हैं।

आयोजनकर्ता और मेसी मंचेन इंडिया के सीईओ भूपिंदर सिंह ने क्षेत्र विकास और शो की खूबियों के बारे में अपने विचार साझा करते हुए बताया कि इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम डिजाइन एंड मैन्युफैक्चरिंग (ईएसडीएम) क्षेत्र विकसित हो रहा है और वर्श 2020 तक यह 400 बिलियन डॉलर तक पहुँच जाएगा। क्षेत्र में ऑटोमैटिक रूट के तहत 100 फीसदी एफडीआइ की अनुमति और भारत सरकार के आक्रामक मेक इन इंडिया अभियान के मद्देनजर, भारतीय ईएसडीएम पारितंत्र अब सिर्फ धारणा से ऐक्शन में बदलने के लिए तैयार है।

इन सकारात्मक रुझानों ने घरेलू उत्पादन के साथ निवेश के लिए बेहद रुचि जागृत की है। फोरम में हिस्सा लेने वाले भारतीय राज्यों द्वारा विदेशी व देशी उत्पादकों के लिए निवेश के अवसर प्रस्तुत किये जायेंगे। सीईओ फोरम-इन्वेस्ट इंडिया से रुचिकर कंपनियों को राज्य के प्रतिनिधियों से जुड़ने में मदद मिलेगी।

हाईशाईन क्रीम हेयर कलर लॉन्च

उदयपुर। हेयर केयर एवं स्टाइलिंग में 15 सालों से अधिक के अनुभव के साथ बीब्लंट के अग्रदूत अधुना शबानी एवं अवान कॉन्ट्रैक्टर ने गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लि. की सर्वश्रेष्ठ प्रोडक्ट डेवलपमेंट टीम के साथ मिलकर बीब्लंट सैलून सीक्रेट हाई शाइन क्रीम हेयर कलर लॉन्च किया। इसमें भारतीय बालों की संरचना, स्किन टोन और मौसम के अनुसार सैलून में सर्वाधिक मांग वाले 7 शेड्स हैं।

बीब्लंट के संस्थापक एवं क्रिएटिव डायरेक्टर अवान कॉन्ट्रैक्टर ने कहा कि फिल्मों, फैशन और दुनिया के विभिन्न हेयर कलर ब्रांड्स के साथ काम करने के हमारे सालों के अनुभव ने हमें बताया कि चमक हेयर कलर का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है। यह बालों की शेड एवं टोन के बराबर ही महत्वपूर्ण है। इसलिए गोदरेज के साथ तीन सालों के गहन शोध एवं टेस्टिंग के बाद हमने बीब्लंट सैलून सीक्रेट हाई शाईन क्रीम हेयर कलर लॉन्च किया, जिसका लक्ष्य घर में हेयर कलर करने वालों को सैलून जैसी फिनिश प्रदान करना है। हमारे कलर की अद्वितीय बात है कि यह 3-पार्ट सिस्टम है, जिसमें हमने बीब्लंट सीक्रेट ऑफ शाईन टॉनिक के साथ परंपरागत कलरेंट एवं डेवलपर का समावेश किया है। यह इन तीन अवयवों का मिश्रण है, जो यूज़र को जबरदस्त ग्लॉस कलर के साथ प्राकृतिक एवं सॉफ्ट टोन भी प्रदान करता है। परिणाम सफेद बालों के प्रतिशत पर निर्भर करते हैं। बीब्लंट ने इस उत्पाद के प्रचार के लिए अपना पहला टेलीविजन कॉमर्शियल भी लॉन्च किया है, जिसमें अभिनेत्री करीना कपूर खान इस उत्पाद का प्रदर्शन करेंगी।

करीना कपूर खान ने कहा कि मैं बीब्लंट के साथ जुड़कर बहुत उत्साहित हूं। इस ब्रांड से मैं सालों से जुड़ी हूं। यह दो हेयर एक्सपर्ट्स, अधुना एवं अवान द्वारा चलाया जाता है, जिन पर पूरा बॉलीवुड अपने बालों के लिए भरोसा करता है।

शब्द रंजन के सहयोगार्थ

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधानक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

पोथीखाना

लकीर लांघती धार देती चार पुस्तकें

बांचनहारों के लिए कहनकारों की कहानियां :

लोककथाओं के अब कहनहारे कम तो सुननहारे भी अति कम रहे इसलिए इनका संसार कहीं यूं ही लुप्त न हो जाय। कुछ लिखनहारों ने इनका संग्रह कर डूबते को तिनके का सहारा दिया। सोचिये, पूरे देश के विभिन्न अंचलों में निवास कर रहे जन-जन के कंठों में लोककथाओं का कितना अखूट खजाना है। जो लिखलीं और जो छप गईं वे बच गईं पर जो नहीं बचीं वे तो असंख्य ही हैं। ऐसे ही असंख्य लोकगीत, संख्यातीत लोकगाथाएं, असंख्य लोकनृत्य, संख्यातीत ख्याल तमाशे, बेहिसाब स्वांग लीलाएं और न खत्म होने वाली कहावतें मुहावरे आदि-आदि हैं। किसने नापा है समुद्र को, और उसकी गहराई को ! क्या कोई बांध पाया है परंपरा को ! क्या कोई मोल कर पाया है हमारी सांस्कृतिक धरोहर का ! लोक में व्याप्त विरासत का !

ऐसे में डॉ. अनूपसिंह द्वारा संग्रहीत 20 लोककथाओं का यह संग्रह 'ता धिन्ना भई ता धिन्ना' जहां एक ओर हमारी आंख खोलने वाला है वहीं उनके इस सोच-कौशल और समझ-दृष्टि को पीठ थपथपाने वाला है कि उन्होंने उस समुद्र को मथकर हमारे समक्ष 20 लोककथाओं का अमृत-घट भर दिया। अपने 'दो शब्द' में उन्होंने ठीक ही लिखा- 'इन कहानियों का कोई लेखक मुझे तो मिला नहीं। बस एक मुंह से दूसरे मुंह तक चलती हुई ये कहानियां मुझ तक आ पहुंची। आधुनिक युग की चकाचौंध में अब न चौपाल है, न कोल्हू, न रहट जहां इन कहानियों के बांचनहारे अपनी रस भीनी किस्सागोई में इनसे वक्त काटते दिखेंगे, इसी वजह से मैं इन्हें संरक्षित रखने की ओर अग्रसर हुआ। इसमं मेरा कुछ नहीं है। जो कुछ है, सब लोक का है।' इसलिए ये लोककथाएं हैं।

इन कहानियों के पात्र वे सब हैं, भिन्न-भिन्न लोक के जिनको हमने देखा है और जो हमारी दृष्टि-पकड़ से बाहर हैं। इसलिए मनुष्य का जुड़ाव मृत्युलोक तक ही सीमित नहीं है। प्रत्यक्ष में नहीं तो स्वप्न में ही सही, वह सबके साथ रमण करता, सब लोकों में सबरंग होता है। यदि ऐसा नहीं होता तो लोककथाओं में वह सब वर्णित क्यों होता ! यही खासियत, यही मजा, यही रंगत और यही रंजन है इन लोककथाओं का।

विद्वान लोग आगे आयें, इन कथाओं को पढ़ें और अपने-अपने अंचलों में व्याप्त कथाओं का संग्रह कर देखें कि इनसे मिलती-जुलती, इससे मेल खाती भाव-संपदा लिये अन्य कैसी कितनी हमशक्ल, हमछाया कहानियां हैं। जैसे सोनाबाई रूपाबाई की कथा कई प्रांतों में नाना-रूप-छवि-रंग में प्रचलित हैं। जैसे पणिहारी कथागीत के कई फैलाव विश्व के विभिन्न हिस्सों तक खंडहरी छरहरी लिये ही सही परिव्याप्त है।

हम अध्ययन तो करें कि परंपराओं की सौगात किस रूप में, कहां-कहां तक अपना वास-प्रवास लिए है। जैसे हम अपने पूर्वजों, पुरखों तथा वंशजों की स्मृति शेष के लिए नाना विध क्रिया-कर्म करते हैं, लोकसंस्कृति के संरक्षण के लिए उससे भी अधिक कारगर उपाय अपेक्षित हैं।

कलियुग के कांटे पर सतयुग का हरिश्चन्द्र :

डॉ. अनूपसिंह घाणी के बैल की तरह बंद आंख के लेखक नहीं हैं। अपने प्रयोगधर्मी रचनाकर्म द्वारा वे कुछ ऐसा नया खनखनाते हैं कि पाठक चौंक जाता है और अपनी खुली आंखों को और अधिक खोलकर देखता है तथा उस देखे को सर्वथा नया पाकर सोचने को बाध्य होता है। ऐसी ही नये भाव-बोध की 'ठहर तारा ठहर' नामक

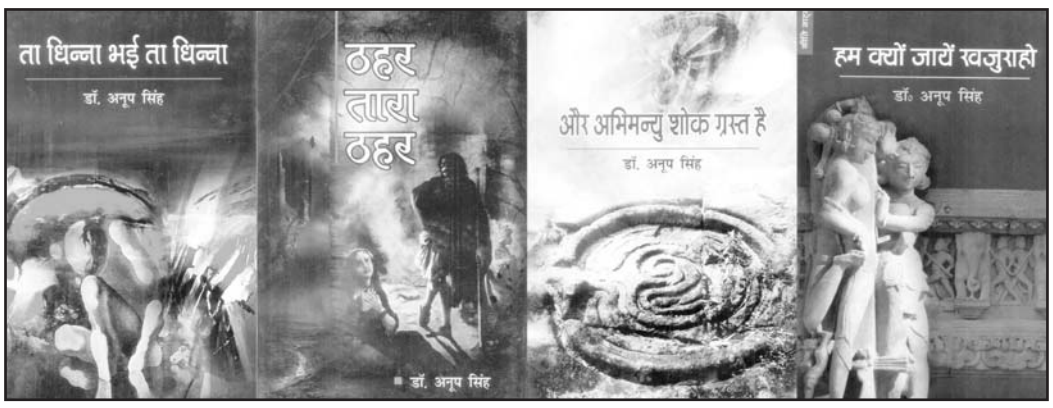

काव्य नाटिका है।

राजीव सक्सेना ने अपने मंतव्य में लिखा भी - 'लेखक ने पौराणिक आख्यान को नये संदर्भ की पड़ताल में देखा तथा अपनी जीवन दृष्टि से 'मीडास टच' देकर राजा हरिश्चन्द्र के यथार्थ का साहित्यिक 'ट्रांसमाइग्रेशन' किया जिससे सतयुग का वह यथार्थ सभी युगों का यथार्थ बन जाता है।'

यही क्यों, लेखक स्वयं ने अपने कथात्मक दृष्टिकोण में कुछ नई उद्भावनाओं को प्रस्तुत करते हुए कुछ सवाल ठोके हैं जैसे-

(क) राजा द्वारा स्वयं अपने को एक आदर्श राजा प्रस्तुत करना होता है तब प्रजा क्या इतनी गई गुजरी थी जो विपत्ति आने पर राजा का साथ छोड़ बैठी और उसे काशी के बाजार में बिक जाने दिया?

(ख) क्या उच्च वर्ग में एक भी ऐसा धनवान नहीं था जिसके कारण राजा को एक दलित के हाथों खरीद लिया गया?

(ग) अस्पृश्यता का बोलबाला तब भी था, वंशानुगत नहीं, कर्म आधारित। क्या इसकी पुष्टि हेतु राजा हरिश्चन्द्र को अछूत बनाया गया ताकि कहा जा सके कि दलित होता नहीं, बनाया जाता है?

(घ) राजा और प्रजा में ऊंच-नीच का वही अंतर है जो एक दलित और उच्च वर्ग में है। महत्व दोनों का है और दोनों के छोर को छुआ नहीं जा सकता।

(च) क्या तुच्छजनों के बिना राजा का कोई अस्तित्व नहीं होता? शक्ति और हेयता समाज दोनों से डरता है।

(छ) ऐसे कौन से कारण थे कि एक अकेली नारी को अपने मृत बच्चे को छाती से चिपकाये श्मशान जाना पड़ा?

(ज) जो समाज धर्म से इतना खोखला हो उसे कौन से सत्य का उपदेश देना था? क्या अंतहीन पीड़ा देकर ही धर्म की रक्षा की जा सकती है?

सार रूप में लेखक की दृष्टि में हरिश्चन्द्र का यह आख्यान दलितोद्धार का आख्यान है। इस काव्य नाटक के पात्र हैं- हरिश्चन्द्र, तारा, विश्वामित्र तथा कथा संकेतक के रूप में स्त्री-पुरुष और एक विक्षिप्त युवक। स्थान गंगाघाट और समय एक दोपहर।

हिन्दी में ऐसे नाट्य प्रयोग प्राय: नहीं ही हुए हैं। डॉ. अनूपसिंह ने इसकी रचनाकर 'एक मृतप्राय विधा को तो संजीवनी प्रदान की ही है, साहित्य जगत के लिए भी एक प्रस्थान बिन्दु प्रस्तुत किया है। सच तो यह है कि ठहर तारा ठहर अपने सम्पूर्ण कलेवर में समय की अदृश्य काया पर रचा गया यथार्थ का नया भाष्य है।'

अभिमन्यु का मानसिक उद्वेलन :

तीसरी 'और अभिमन्यु शोकग्रस्त है' पुस्तक भी काव्य नाटिका है। यह एक भिन्न रूप में प्रस्तुत है। डॉ. अनूपसिंह ने इस कृति में भी सर्वथा नया प्रयोग किया है। कथा-परिदृश्य के बारे में डॉ. अनूपसिंह लिखते हैं- 'युद्धभूमि का सांयकाल है। भीष्म पितामह शरशय्या पर पड़े हैं और यहीं से शुरू होता है अभिमन्यु का मानसिक उद्वेलन। एक दिन के सतत् युद्ध के उपरान्त वह वीरगति को प्राप्त होता है। अभिमन्यु एक ऐसा योद्धा है जो किसी भी प्रलोभन से नहीं बिकता और अपने कर्त्तव्य पर हंसते-हंसते प्राण न्यौछावर कर देता है।

मंच पर दो अभिमन्यु उपस्थित हैं। एक महाभारतकालीन दूसरा आधुनिककालीन। महाभारतकालीन प्रत्यक्ष है और आधुनिककालीन छायामय। चक्रव्यूह के सात द्वारों की परिकल्पना को मंच पर इस प्रकार व्यवस्थित किया जा सकता है कि जिससे युद्ध-स्थल का प्रतीकात्मक अनुभव होकर उनकी संवेदनात्मक अनुगूंजें मुखर हों। मंच पर सात द्वार एक के बाद एक, थोड़-थोड़े अंतराल पर हों। प्रत्येक दरवाजे का प्रारूप एक-दूसरे से भिन्न हो, जो कि आकृति-विकृति, बनाव-शृंगार में भ्रम का आभास दे तथा प्रत्येक पर काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर तथा जिजीविषा के प्रतीक जयद्रथ, कर्ण, दुर्योधन, शकुनि, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य तथा दु:शासन के सैनिक-प्रतीक अपनी-अपनी वीरोचित वेशभूषा में लख्य विद्ध रूप में खड़े हों।

अभिमन्यु का प्रत्येक से वाद-संवाद होने की स्थिति में सैनिक-प्रतीक के अन्दर से प्रत्येक बार पृथक-पृथक रंगों की प्रकाश रेखाएं निकलकर अभिमन्यु के शरीर से टकरायें, जिससे ऐसा लगे जैसे किरणें उस पर वार कर रही हैं और वह उन्हें झेल रहा है।'

अणु-अणु में प्रेम की समुबंध क्रिया :

चौथी पुस्तक 'हम क्यों जायें खजुराहो' एक अलग सर्वथा नई दृष्टि का गीतिनाट्य है। पुस्तक के प्रारंभ में खजुराहो का शोधपूर्ण अर्थसार देते हुए लेखक ने बताया - '642 ई. में ह्वेनसांग ने खजुराहो भ्रमण किया और इस शहर की सुंदरता से मुग्ध हो चीनी में 'चीची तू' नाम दिया। फिर 1335 में इबने बतूना ने यहां का दौरा कर बड़ी संख्या में खजूर के पेड़ देख इस जगह को 'खजूरो' नाम दिया। सन् 1022 में महमूद गजनबी के साथ आए अबू रिहान अलबरुनी ने जैजाहती (बुन्देलखंड) की राजधानी के रूप में खजुराहो का उल्लेख किया। इस काल में दाम्पत्य जीवन की युगल रूप में मैथुनी लौकिक चेष्टाओं एवं भावोद्रेकों को शरीर के सहज एवं अनिवार्य धर्म के रूप में स्वीकृति एवं मान्यता थी।

जीवन भी एक कला है और प्रत्येक जीवित प्राणी प्रजनन के द्वारा अपने प्रतिरूप को पैदा कर रहा है। संसार की समस्त कलाओं की अधिष्ठात्री देवी को कलावती कहा गया है। काम-कला भी उन्हीं की विलासिता को व्यक्त करती है। भारतीय चिंतकों में सेक्स संबंधी चिंतन का सार यह है कि सेक्स नर-नारी का मिलन, दैहिक, सांसारिक एवं स्थूल कर्म है।'

अपने आत्मकथ्य में बिना किसी लागलपेट स्पष्ट कर दिया- 'सृष्टि का अणु-अणु प्रेम की समुबंध क्रिया में हर पल डूबा रहता है। स्त्री-पुरुष इस क्रिया में विशेष अनुभूत करते हैं क्योंकि वे विचारवान हैं। खुजराहो स्त्री-पुरुष की शाश्वत प्रेम गाथा है। वह प्रेम कला का पर्याय बन चुका है जो हर मोड़, हर चौराहे, हर दिन, हर गली में मिलता है। नारी अस्मिता, नारी स्वातंत्र्य, नारी कर्मभूमि के क्षय में पुरुष एक अणु है। विशालकाय नारी का बहुभुजी रूप खजुराहो का दर्शन है। अपनी नाट्य प्रस्तुति में डॉ. अनूपसिंह ने बीसों-पचासों तरह के प्रयोगों द्वारा मनुष्य और खजुराहो की कलाकृतियों के मेल की जीवंत प्रस्तुति देकर साक्षात खजुराहो को ही मूर्तिवंत छायावंत आलिंगनवत कर दिखाया है। सचमुच में उन्होंने क्या कुछ लिखा, यह लिखकर दर्शाने की चीज नहीं है, पुस्तक पढ़कर चित्रोपम होने की कला भी जब कमाल देती है तो फिर मंचन हो तो दृश्य-छवियों को देखकर दिल लेता-दिल देता खजुराहो प्रत्यक्ष हो तो दर्शक स्वयं ही कुछ होता-महसूसता अनुभव करेगा-हम क्यों जायें खजुराहो ? यही इस गीतिनाट्य की सर्वांग सफल परिणति है।'

चारों कृतियां समन्वय प्रकाशन, के बी 97, कविनगर, गाजियाबाद-201002 से प्रकाशित हैं।

-म. भा.

झकनाड़िया, घोटड़ व धानिया पुरस्कृत

सीकर। धानुका सेवा ट्रस्ट, साहित्य संसद एवं श्री सरस्वती पुस्तकालय फतेहपुर की ओर से फतेहपुर शेखावाटी में हुए साहित्य प्रेमोत्सव व सम्मान समारोह में डॉ. रामकुमार घोटड़ को इक्कीस हजार का 'सरस्वती सेवा पुरस्कार', शंकर झकनाड़िया को ग्यारह हजार का 'मानुष तनु पुरस्कार' व युवा कहानीकार उम्मेद धानियां को ग्यारह हजार का 'श्रीमती बसंतीदेवी धानुका युवा पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

एसडीएम पुष्कारराज शर्मा मुख्य आतिथि तथा भंवरसिंह सामौर अध्यक्ष थे। अस्वस्थता के चलते झकनाड़िया के बेटे पवन शर्मा ने उनका पुरस्कार ग्रहण

किया। इस मौके पर केसरीकांत शर्मा 'केसरी', साहित्यानुरागी नेमीचन्द शर्मा, कलाप्रेमी दामोदर माटोलिया का भी सम्मान किया गया। श्याम महर्षि ने शिशुपाल सिंह नारसरा द्वारा संपादित पत्रिका 'मरू मंगल' व नरेंद्र धानुका की पुस्तक 'अनोखी यात्रा' का लोकार्पण किया। समारोह में ताऊ शेखावाटी, दुलाराम सहारण, कमल शर्मा, भंवरलाल महरिया भंवरो, रामगोपाल शास्त्री सहित बड़ी संख्या में साहित्यकार एवं प्रबुद्ध नागरिकगण मौजूद थे।

जहर उगलते कालिया नाग

ओ कालिया दमन श्रीकृष्ण! द्वापर के युग पुरुष! सौलह कलाओं के प्रकाश! द्वारकाधीश कृष्ण कन्हैया ! तुमने तो कालिया नाग की पत्नी की प्रार्थना पर उसका एक फन छोड़ा था पर आज इस मशीनी युग में यमुना और राम की मैली गंगा में ही नहीं, कितनी नदियों, जलाशयों में वस्त्र और चर्म उद्योग का दूध पी-पी कर बढ़े प्रदूषण के सहस्त्रों कालिया नाग लहरा इतरा कर जहर और जहर और जहर उगल रहे हैं। हर रोज निर्दोष जलजीवों की जान ले रहे हैं। नदी-झीलों के कछार मरी मछलियों से पट रहे हैं। ओ जीवन उपनिषदों के स्तर तत्व गीता के उपदेश ! क्यों नहीं दिया तुमने अपनी शरण में आने के साथ एक स्त्री, एक पर्स, दो पैर, एक जोड़ी जूता का संदेश। ओ सृष्टिकर्ता विश्व रूप श्रीकृष्ण यशोदानंदन! कैसे छूट गया तुम से यह सृष्टि का इनका इतना प्रोडक्शन कि उसे खपाने को होते हैं रोज-रोज कितने रिडक्शन सेल, सेल, सेल। दिन-दिन बढ़ रहा है जिन्दगी में बिना जरूरत खरीदी का खेल।

-डॉ. मालती शर्मा

(पृष्ठ दो का शेष)

-विलक्षण प्रज्ञा एवं कौशल...

उन्होंने जिस 'जिनवाणी' पत्रिका का लंबे समय तक संपादन किया, उसका प्रकाशन सम्यग्ज्ञान प्रचार मंडल, जयपुर से अनवरत जारी है।

वेदना के वरदान आचार्यश्री :

आचार्यश्री के जीवन की अंतिम अवस्था को बड़ी बारीकी से भाई साहब ने आत्मसात किया। अपनी कविता में उसको माला की तरह पिरोया ही नहीं, अपितु स्वयं अपनी रूग्णावस्था को भी उसी भाव-भूमि से पिरोकर अपने स्वास्थ्य की प्रतिकूलता को सर्वथा अनुकूल किये रखा। वेदना को वरदान मान अपने आत्मस्वरूप में रमण करने को 'राम', कर्म-क्षय करने को 'कृष्ण', रहम का दरिया बहाने को 'रहीम' और मैं का ममत्व मारने को 'महावीर' माना। जब-जब भी उनमें जघन्य पीड़ा का वेग आता वे अपने सामने दीवाल पर टंगी आचार्यश्री की तस्वीर को आत्मस्थ भाव से, हाथ जोड़े निहारा करते। मुझे कई बार लगा कि वे उनसे संलाप कर उनका सामीप्य पा आत्म-शांति को वरण किये हुए हैं।

समाधिभाव को समर्पित 'ए मेरे मन' :

अपनी अस्वस्थता की स्थिति में भी भाई साहब का कवि-मन सदैव स्वस्थ एवं जागृत रहा। इस दौरान उन्होंने जो कविताएं लिखीं उनका 'ए मेरे मन!' नाम से संकलन प्रकाशित कराया गया। यह पुस्तक उन्होंने आचार्यश्री हस्तीमलजी के ही समाधिभाव को समर्पित की। इसके आत्मकथ्य में उन्होंने लिखा - ''ये कविताएं मेरी अस्वस्थता की स्थिति में लिखी गई हैं। इनका मूल स्वर आध्यात्मिक है। जब भी मेरी नींद खुल जाती, मैं कलम लेकर बैठ जाता और मेरे मन में जो भी भाव उमड़ते, उन्हें स्वरबद्ध कर लेता।'' इसमें एक कविता आचार्यश्री पर 'मेरे धर्मगुरु' शीर्षक से है जो इस संग्रह की सबसे लंबी कविता है। इसमें उन्होंने आचार्यश्री को कई विविध रूपों में देखा, समझा है। उन्होंने ही नहीं, उनके साथ जब-जब भी मैंने आचार्यश्री के दर्शन किये, उन्हीं रूपों को पाया। उस कविता में उन्होंने लिखा-

''जब भी चरणों में गया / अपार भीड़ में पहचान मिली/ धनकुबेरों के बीच प्रमुखता मिली/ बार-बार यह निर्देश मिला कि/ समाज में व्याप्त रूढ़ियों को तोड़ो/ विद्वानों, श्रीमंतों, सामाजिक कार्यकर्ताओं/ और प्रशासनिक अधिकारियों को जोड़ो।''

उन्होंने विद्वत् परिषद द्वारा जब-जब भी संगोष्ठी बुलाई, उसमें विद्वानों के अलावा सेठों-श्रीमंतों, समाजसेवियों तथा उच्च अधिकारियों को भी समान भागीदारी दी।

जोधपुर में 16 से 18 अक्टूबर 1991 को त्रि-दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी आयोजित की गई। इस संगोष्ठी का विषय 'आचार्यश्री हस्तीमलजी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व' रखा गया। इस संगोष्ठी में विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न कोणों से आचार्यश्री के व्यक्तित्व और कृतित्व पर मनन, मीमांसा, समीक्षा और विश्लेषण किया। इससे निष्कर्ष निकला कि आचार्यश्री के समग्र जीवन-परिवेश को दिग्दर्शित करनेवाले एक मानक ग्रंथ का प्रकाशन किया जाय।

भाई साहब ने इसके लिए विभिन्न विद्वानों से परामर्श-विमर्श लिया और एक वृहद ग्रंथ तैयार करवाया। स्वयं आचार्यश्री ने भी इसे अवलोकित किया। सबका मन बना कि इसका कलेवर छोटा कर एक सुंदर सुगठित स्वरूप दिया जाय। यह कार्य भाई साहब को ही करना था किंतु अचानक उनके अस्वस्थ होने से संभव नहीं हो सका।

जयपुर में जब मैं उनके पास था तब उन्होंने मुझे कहा, ''महेन्द्र, एक अति महत्वपूर्ण कार्य जो मेरे द्वारा होना था, वह नहीं हो पा रहा है। आचार्यश्री से संबंधित ग्रंथ का कार्य मेरे रहते यदि पूर्ण नहीं हुआ तो मुझ पर बहुत बड़ा कर्ज रह जायेगा अत: तुम इसे पूरा कर दो।'' मैंने जयपुर में रहकर ही उस विशालकाय ग्रंथ को उनकी चाह के अनुसार पूर्ण किया और वहीं लालभवन में विराजित आचार्यश्री हीराचंदजी के श्रीचरणों में रख दिया। इससे भाई साहब को बड़ा आत्मतोष मिला।

तन में व्याधि, मन में समाधि :

आचार्यश्री हस्तीमलजी के जीवन-दर्शन का प्रभाव मैंने भाई साहब पर देखा। अंतिम समय में जैसा जीवन आचार्यश्री ने जिया, भाई साहब ने भी उन्हीं से प्रेरित, मार्गदर्शित हो अपने तन में घोर व्याधि के होते हुए भी मन को सदैव समाधिभाव में रखा। मृत्यु को निकट आते देख उसके दबाव में दुख से भीगे रूप में लिखी कविताओं में भी वैयक्तिक निर्वाण की बजाय लोकमंगल तथा समता की आत्मीय और उदात्त कामनाएं मुखर हुई मिलती हैं। ये कविताएं अपने समग्र रूप में जैनदर्शन का ही प्रभाव लिये हैं।

अपने उल्लसित मन से जीवन का जो सार-तत्व और सत्य-कथ्य प्राप्त किया वह समग्र रूप में आचार्यश्री का ही अवदान था। जीवन चाहे कितना ही बोझिल, अस्तव्यस्त दुखजनित एवं घनीभूत पीड़ाओं से आक्रामित हो जाय किंतु वह जरा भी पराजित न हो, यह समताभावी सत्व ही व्यक्ति को तीर्थंकरगामी बनाता है।

ऐसी कविताओं का 'ऐ मेरे मन !' नामक संग्रह शारीरिक क्षमता नहीं रहते हुए भी, डगमगाते पांवों के बल, शरीर से झोला खाते हुए भी भाई साहब हमें प्रकाशक के वहां ले गये। कुछ किताबें बंधवाई और लालभवन पहुंचे, जहां आचार्यश्री हस्तीमलजी के उत्तराधिकारी आचार्यश्री हीराचंदजी महाराज का व्याख्यान हो रहा था।

भाई साहब को हाथों पर उठाकर ऊपर की मंजिल ले जाया गया। उनसे खड़ा नहीं हुआ जा रहा था, तब भी उन्होंने बड़े आत्मविश्वास का संबल लिए आचार्यश्री को श्रद्धा-वंदना की अपनी भावांजलि व्यक्त की और पुस्तक उनके श्रीचरणों में समर्पित की। मैंने देखा, पूरी धर्मसभा भाव-विह्वल हो, अश्रु विगलित थी। किसी से कुछ भी कहते नहीं बन रहा था। हम सब आंसुओं का अघोरा लिये घर लौटे। भाई साहब के मुखमंडल पर आत्मतोष की चमक थी कि उन्होंने अपने जीवन का सर्वस्व समर्पण 'उन' के ही 'इन' आचार्य को कर दिया। जब कुछ नहीं बचता है तो यादें बची रह घनीभूत पीड़ा का सुख दे जाती हैं। वह काल और वे लोग अब स्मृतियों के सुमेरु बने हुए हैं जो यदा-कदा मेरी नन्हीं आंखों के गवाक्ष से दुर्दिन का पूरा फैला आकाश दिखा अनंत में विलीन हो जाते हैं। सोचता हूं क्या है जीवन! क्या है मृत्यु! यह कैसा चलाचली का खेल है जब जीवन ही मृत्यु बन मुखर होता है और मृत्यु फिर से जीवनानंद को वरण करने का मुखौटा लगाती महोत्सव होती है।

'सर्जीकल सेफ्टी' पर वर्कशॉप

उदयपुर। पेसिफिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल के सर्जरी विभाग की ओर से सर्जीकल सेफ्टी

पर आयोजित वर्कशॉप में डॉ. के. सी. व्यास ने कहा कि भारत में ऑपरेशन के दौरान 20 फीसदी मरीज किसी न किसी तरह इन्फेक्शन से ग्रसित हो जाते हैं जबकि यूके एवं यूएसए जैसे देशों में यह 2 फीसदी है जो कि न के बराबर है।

कई बार डॉक्टर या नर्सिगकर्मियों की लापरवाही से ऑपरेशन के दौरान कैंची, सुई या बेन्डेज जैसी चीजें मरीज के शरीर में रह जाती हैं जिससे कई बार मरीज की मौत हो सकती है या पुन: ऑपरेशन की पीड़ा को झेलना पड़ता है। अगर इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखें तो इस तरह की लापरवाही से मरीज को बचाया जा सकता है। सर्जरी विभाग के डॉ. बी. एम. सोनी एवं डॉ. गौरव वधावन ने ऑपरेशन के दौरान सावधानियों की जानकारी दी। वर्कशॉप में वाइस चॉसलर डॉ. डी. पी. अग्रवाल, डॉ. एम. सी. बसल, डॉ. अरूणा सोलंकी, डॉ. एस. एस. गुप्ता सहित 100 से अधिक नर्सिगकर्मी एवं जूनियर रेजीडेन्ट डॉक्टर उपस्थित थे।

टाटा मोटर्स को मिला 5,000 बसों का ऑर्डर

उदयपुर। देश की सबसे बड़ी वाणिज्यिक वाहन विनिर्माता टाटा मोटर्स को भारत के 25 राज्य/शहरी परिवहन उपक्रमों से 5,000 से ज्यादा बसों की आपूर्ति का ऑर्डर मिला है। यह टाटा मोटर्स के ऑर्डर बुक में पिछले साल की तुलना में 80 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है।

टाटा मोटर्स लि. के कार्यकारी निदेशक, कॉमर्शियल व्हीकल बिज़नेस यूनिट रवि पिशरोडी ने कहा कि विभिन्न एसटीयू/शहरी परिवहन सेवा प्रदाताओं की ओर से मिले ऑर्डर इस बात का प्रतिनिधित्व करते हैं कि अब उनका रूझान नई टैक्नोलॉजी, सुरक्षा, आरामदायक फीचर्स और कनेक्टेड आईटी सेलैसबसों की ओर तेजी से बढ़ा है। ऑर्डर दिए गए बसों में से 1500 से ज्यादा बसों को टाटा मोटर्स के संयुक्त उपक्रम विनिर्माण संयंत्र टाटा मार्को पोलो (धारवाड़ और लखनऊ) तथा एसीजीएल गोवा में बनाया जाएगा और उन्हें इन फीचर्स से पूरी तरह से लैस और एकीकृत किया जाएगा। टाटा मोटर्स की योजना इन सभी ऑर्डर्स को वित्तवर्ष 2016-17 में पूरा करने की है। टाटा मोटर्स ने 'विकसित होने वाली स्मार्ट सिटीज़' में भविष्य के परिवहन की जरूरतों को पूरा करने के लिए इलेक्ट्रिक हाइब्रिड बसों और आर्टिकुलेटेड बसें भी विकसित की हैं, ये दोनों बसें जल्द ही भारतीय सड़कों पर नज़र आएंगी।

टाटा मोटर्स लि. के बिज़नेस हेड (कॉमर्शियल व्हीकल्स- पैसेंजर) संदीप कुमार ने कहा कि यात्री परिवहन क्षमताओं और टैक्नोलॉजिज़ पर शुरूआत में निवेश ने टाटा मोटर्स के तौर हमें दुनिया के सबसे बड़े बस बाज़ारों में से एक में पूर्णत: एकीकृत परिवहन समाधान की आपूर्ति करने में अग्रणी भूमिका निभाने में सक्षम बनाया है।

द न्यू प्लैटिनम इटियॉस व इटियॉस लिवा पेश

उदयपुर। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) ने न्यू प्लैटिनम इटियॉस और न्यू इटियॉस लिवा पेश करने की घोषणा की। इसे भारतीय बाजार के लिए डिजाइन किया है। नई इटियॉस में बोल्ड न्यू डिजाइन, सुरक्षा खासियतों का बेजोड़ प्रदर्शन है। इस पेशकश से टोयोटा उद्योग की पहली कंपनी बन गई है जिसने इलेक्ट्रॉनिक ब्रेक फोर्स डिस्ट्रीब्यूशन (ईबीडी) के साथ एंटी लॉक ब्रेकिंग सिस्टम (एबीएस) का सभी ग्रेड के टोयोटा के सभी मॉडल्स में मानकीकरण कर दिया है। सुरक्षा, निर्भरता, क्लास और एलीगैंस के विश्व के नए मानक स्थापित करते हुए नई इटियॉस का अनावरण द न्यू प्लैटिनम इटियॉस और न्यू इटियॉस लिवा के रूप में किया गया। इटियॉस श्रृंखला का निर्माण उसी असेम्बली लाइन में किया जाता है जहां दुनिया की नंबर 1 सेडान-कॉरोला एलटिस का निर्माण किया जाता है।

29 रुपये में महीने भर का इंटरनेट

उदयपुर। भारती एयरटेल ने 29 रुपये में महीने भर का इंटरनेट प्रीपेड डेटा पैक की घोषणा की है। इस पैक को ऐसे ग्राहकों को लक्षित कर पेश किया गया है, जो पहली बार इंटरनेट इस्तेमाल कर रहे हैं या कभी-कभी इंटरनेट ब्राउज़िंग और सोशल मीडिया/आईएम का उपयोग करते हैं।

भारती एयरटेल के डायरेक्टर- ऑपरेशंस (भारत और दक्षिण एशिया) अजय पुरी ने कहा कि लाखों भारतीय अपने मोबाइल फोन के ज़रिए ऑनलाइन आते हैं और इनमें से अधिकतर कम कीमत वाले डेटा पैक खरीदते हैं, जिनकी वैधता कुछ दिन की होती है। हमारे द्वारा कराए गए शोध में सामने आया कि ऐसे ग्राहक किफायती कीमत पर एंट्री लेवल के उत्पाद की तलाश में रहते हैं, जिससे वे लंबे समय तक ऑनलाइन रह सकें और वह भी पैक की वैधता अवधि की चिंता किए बिना। महीने भर का इंटरनेट एक ऐसी पेशकश है, जो ग्राहकों को वैधता अवधि की अड़चन से राहत देता है और वे 1 रुपये प्रतिदिन से भी कम कीमत पर महीने भर ऑनलाइन रह सकते हैं।

वीरांगना कृष्णा

कितने लोग हैं जो अपने कहे का निर्वाह करते हैं? कितने लोग हैं जो अपने प्रिय के लिए जैसा कहे, वैसा कर दिखाते हैं ? ऐसे अधिक नहीं हैं परंतु जो हैं उन्हें कौन जान पाया ? इतिहास के पन्ने पर उनके लिए एक शब्द भी नहीं चढ़ पाया। वह वीरांगना कृष्णा थी और उसके प्रिय वीरवर कल्ला राठौड़ थे जिनके पराक्रम से प्रभावित होकर महाराणा उदयसिंह ने उन्हें पेमला डाकू का काम तमाम करने का काम सौंपा। पेमला बड़ा आंतकी और उपद्रवी था जिसने भोराईगढ़ और टोकर को अपने अधीन कर रखा था। कल्लाजी लीले घोड़े पर सवार होकर शिवगढ़ पहुंचे। वहां एक महुए के पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे कि सामने महलों से राजकुमारी कृष्णा की निगाह उन पर पड़ी। कृष्णा शिवगढ़ के ठाकुर कृष्णदत्त की लड़की थी। कृष्णा ने अपनी दासी को उस राजकुमार के पास भेजा ताकि वह उसके संबंध में खोजखबर कर सके।

पेमला को पछाड़ने कल्लाजी पहुंचते उससे पूर्व ही कृष्णा ने वीरवेश धारण कर घोड़ा पकड़ा और उस पर सवार हो पेमला को जा ललकारा। यह ललकार इतनी जबर्दस्त थी कि कृष्णा ने तलवार की नोक पर पेमला का सिर लाकर कल्लाजी के चरणों में रख दिया। कल्लाजी ने उसकी बहादुरी पर शाबासी दी और परिचय पूछा। कृष्णा बोली- मैं पुरूष नहीं, नारी हूं। आपको जब से देखा तब से मैं सदैव के लिए आपकी हो गई हूं। आप मेरे महल पधारें और अतिथ्य ग्रहण करें। कल्लाजी ने उसे हृदय से लगाते हुए कहा- अभी तो नहीं परंतु मरते-जिन्दे रहते किसी भी हालत में एक बार अवश्य आऊंगा।

चित्तौड़ के युद्ध में कल्लाजी ने देवी के समक्ष अपनी भूल का प्रायश्चित अपने हाथ से अपना सिर देकर किया। देवी ने तब उनके हृदय में आंखें और हाथ में तलवार दी जिससे कल्लाजी दुश्मनों को खदेड़ते हुए सलूम्बर से पंद्रह किलोमीटर दूर खेजड़ी के पास पहुंचे। वे प्यास से अति व्याकुल हो मरे जा रहे थे तब खेजड़ी झरी से कल्लाजी ने उससे अपनी प्यास बुझाई और वहीं उनका रूंड गिरा जिससे वे मृत्यु को प्राप्त हुए।

जहां उनका रूंड गिरा वहां रूंडेड़ा नामक गांव बसा। उधर देवी के स्वप्न द्वारा कृष्णा ने वह सारा दृश्य देखा। उसने तत्काल अपनी दासी चम्पा को उठाया और उसे साथ ले, छकड़े में सवार हो रूंड स्थल पहुंची। कल्लाजी को मूंड विहीन देख वह विलाप करने लगी। वहां उसने देवी जगदंबा का स्मरण किया जिससे देवी ने प्रकट हो कृष्णा के हाथों में कल्लाजी का सिर दिया। कृष्णा ने विचार किया कि अब उसका जीवित रहना व्यर्थ है। अपना सर्वस्व अपने स्वामी को समर्पित करने के विचार से उसने अपनी तलवार से अपने अंगों के 24 टुकड़े किए और अपने स्वामी कल्लाजी के साथ उत्सर्ग कर दिया।

कान्यो मान्यो

चूल्हे मांडना ओ छोर्‌यां चूल्हे मांडना

कान्यो को पिछले कुछ दिनों से अपनी विरासत को बचाने का भूत सवार हुआ। अच्छा विचार जान वह फटाफट मान्यो को अवगत कराने गया। मान्यो खाट पर पसर अंगड़ाई ले रहा था। रामासामा कर कान्यो ने अपना मंतव्य बताया, बचपन में बालिकाओं का एक खेल देखा। इसमें कुछ बालाएं पंगत में बिठा दी जातीं। उनके दोनों पांवों की पगथलियां मिलकर चूल्हे का रूप धरती और उन पर दोनों हाथों की मुट्ठियां रख देतीं जैसे चूल्हे पर कोई बर्तन कढ़ाई तपेली का प्रतीकार्थ रखा हुआ है।

मान्यो गहरी दिलचस्पी लगाये कान्यो की सीध में कान खड़ा किये सुनता रहा। कान्यो बोला- इधर दो छोरियां बारी-बारी से एक ल्होड़ी सौत तथा दूसरी बड़ी सौत बनकर पंगत बैठी बालिकाओं के पास आती और क्रम से अपने हाथ से उनकी मुठ्ठी बने चूल्हा-उपकरण को छुवाती, पूछती- ल्होड़ी सौत आई सो क्या कहा? पंगत वाली बोलती- चूल्हा मांड जो, चूल्हा मांड जो। यह सुन बड़ी ल्होड़ी पर झपटती और उसे दुत्कारती हुई कहती- धुर्रे म्हारी ल्होड़ी सौत। ल्होड़ी-बड़ी सौतों का यह खेल चलता रहता। पंगत वाली धुर्रे सुन और उसके साथ डांटडपट तथा हल्कीपुल्की चुहलबाजी देख खिलखिलतीं।

मान्यो गुणवंत था। इस खेल से उसने एक बड़ा तथ्य निकाला कि लड़की शादी के बाद भी स्वतंत्र नहीं है। वह ल्होड़ी बने या बड़ी, उसके भाग्य में स्वतंत्र बने रहने का सुख नहीं है। एक म्यान में दो तलवार की तरह जीवन बसर के लिए उन्हें बाध्य होना ही है।

सामाजिक उत्थान के लिए बालिका शिक्षा जरूरी : कटारिया

उदयपुर। गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने बालिका शिक्षा के विस्तार और लोक जागरुकता को सामाजिक एवं आर्थिक विकास का सशक्त जरिया बताया है और कहा है कि व्यक्तित्व विकास से लेकर सामुदायिक एवं समग्र आंचलिक विकास की धाराओं को इसी के माध्यम से तीव्रतर किया जा सकता है। गृहमंत्री कटारिया उदयपुर के रेल्वे ट्रेनिंग समागार में राजस्थान महिला परिषद के 70वें स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे। समारोह की अध्यक्षता नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने की जबकि समाजसेवी जगदीशराज श्रीमाली विशिष्ट अतिथि थे।

गृहमंत्री ने स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्रीमती शान्ता त्रिवेदी एवं परशराम त्रिवेदी का स्मरण किया और उनके द्वारा बालिका शिक्षा के क्षेत्र में ऐतिहासिक पहल की चर्चा करते हुए कहा कि जिस समय बालिका शिक्षा को अभिशाप समझा जाता था, राजस्थान की साक्षरता दर 3 प्रतिशत थी उस समय बालिका शिक्षा के लिये ठोस प्रयास किए और राजस्थान महिला परिषद की नींव रखी और इस दिशा में उपलब्धियों की श्रृंखला का सराहनीय सूत्रपात किया। उन्होंने कहा कि शांता त्रिवेदी द्वारा राजस्थान महिला परिषद की स्थापना एवं सैकड़ों आदिवासी बालिकाओं को संस्था परिसर में छात्रावास खोलकर शिक्षा की अलख जगाई है। इसी का परिणाम है कि आज कई आदिवासी बालिकाएं डॉक्टर, ऑफीसर, बनी हैं। यह इसी संस्था की देन है। यह संस्था बच्चों का संस्कार निर्माण करने वाली संस्था है, इस संस्था के लिये हरसंभव सहयोग देंगे।

महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने कहा कि राजस्थान महिला परिषद अपनी आजादी के साथ से ही बालिका शिक्षा में जो कार्य कर रही है उसके लिये संस्था की संस्थापिका स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्रीमती शांता त्रिवेदी एवं परशराम त्रिवेदी की भूमिका ऐतिहासिक है। राजस्थान महिला परिषद को बालिका शिक्षा के लिये नगर निगम की ओर से प्रोत्साहन के साथ ही सम्बल देने के लिए भरसक प्रयास किए जाएंगे। जगदीशराज श्रीमाली ने शैक्षिक गतिविधियों के प्रोत्साहन एवं बहुआयामी विकास के लिए गृहमंत्री की तारीफ की और कहा कि विकास पुरुष के रूप में उनका कर्मयोग अनुकरणीय है। परिषद परिसर में आदिवासी बालिकाओं के छात्रावास के लिए दिए गए सहयोग के लिए उन्होंने कटारिया के प्रति आभार व्यक्त किया। आरंभ में संस्था अध्यक्षा श्रीमती चन्द्रकांता त्रिवेदी एवं निदेशक किशन त्रिवेदी ने अतिथियों का स्वागत किया। समारोह में उत्कृष्ट कार्य के लिये श्रीमती प्रमिला उप्पल, प्रकाशचन्द्र सिसोदिया, गोपाल गौड़, प्रकाशचन्द्र सालवी, श्रीमती विजयलक्ष्मी जैन को सम्मानित किया गया। बच्चों द्वारा कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती विजयलक्ष्मी जैन, एवं आरती आर वैष्णव ने किया।

'आकाश भटका हुआ' को इक्यावन हजार का पुरस्कार

चूरू। प्रयास संस्थान, चूरू की ओर से नामचीन हिंदी साहित्यकार प्रो. नंदकिशोर आचार्य को उनकी काव्य-पुस्तक 'आकाश भटका हुआ' पर डॉ. घासीराम वर्मा पुरस्कार दिए जाने की घोषणा की गई है। संस्थान के अध्यक्ष दुलाराम सहारण ने बताया कि आगामी अक्टूबर माह के प्रारंभ में चूरू में आयोजित एक समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार स्वरूप 51000 रुपये नगद, शॉल, श्रीफल तथा प्रतीक चिह्न प्रदान किया जाएगा।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की नई कार्यकारिणी ने ली शपथ

उदयपुर। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का गठन अच्छे उद्देश्य के साथ हुआ है। प्रोफेशन को समाज और धर्म के साथ जोड़ना महत्वपूर्ण है। समाज को आगे बढ़ना है तो हर वर्ग को साथ लेकर

चलना होगा। यह बात तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी के शपथ ग्रहण समारोह में मुख्य अतिथि जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी व भूजल मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी ने कही। अध्यक्षता सूर्यप्रकाश मेहता ने की जबकि विशिष्ट अतिथि एस.एस. कॉलेज के निदेशक मनमोहनराज सिंघवी थे। इस मौके पर श्रीमती किरण माहेश्वरी ने नवीन कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण करवाई।

समारोह में साध्वीश्री कीर्तिलता ने कहा कि सबके भीतर योग्यता है, प्रतिभा है, टलेंट है। भीतर का जज्बा जगता है तो कोई महावीर, बुद्ध, राम-कृष्ण तो कोई किरण माहेश्वरी व कोई कल्पना चावला बनता है। साध्वीश्री शांतिलताजी ने कहा कि आज दुनिया एक ऐसे मानव की तलाश में है जो समय आने पर तलवार की तरह अडिग रह सकता हो लेकिन उसके भीतर शांति, करूणा और प्रेम हो।

विशिष्ट अतिथि मनमोहनराज सिंघवी ने कहा कि तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम अच्छा काम कर रही है। फोरम के कार्यों को देखते हुए सिंघवी ने इंजीनियरिंग के 5 बच्चों को अपने कॉलेज में फ्री एज्यूकेशन देने का आश्वासन दिया।

नव निर्वाचित अध्यक्ष निर्मल धाकड़ ने बताया कि हमारा जोर सदस्यों के मैलमिलाप पर अधिक होगा। बच्चों के लिए केरियर गाइडेंस के प्रोग्राम आयोजित कर उन्हें सही दिशा में निर्देशित करने का प्रयत्न किया जाएगा। स्वास्थ्य एवं चिकित्सा कार्यक्रमों के अलावा टीपीएफ द्वारा बीमारियों के मामले में सैकण्ड ओपिनियन सेल बनाकर समाजजन को इसका लाभ दिया जाएगा।

प्रवक्ता डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत सूर्यप्रकाश मेहता एवं डॉ. आर.एस. नैनावटी ने किया। अतिथियों का परिचय डॉ. निर्मल कुणावत ने दिया। पिछले वर्ष की गतिविधियों की जानकारी सीए मुकेश बोहरा ने स्लाइड शो के माध्यम से दी। राष्ट्रीय सह सचिव अंकुर बोर्दिया ने टीपीएफ के प्रकल्पों की जानकारी दी। अतिथियों का सम्मान कपिल इण्टोदिया, सीए सी.एस. नैनावटी एवं श्रीमती चंद्रा बोहरा ने किया। नवनिर्वाचित सचिव ऋषभ मेड़तवाल ने आभार व्यक्त किया। संचालन मिनी सिंघवी ने किया।

51 दिव्यांग एवं निर्धन बने हमसफर

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में दिव्यांग एवं निर्धनजन का नि:शुल्क सामूहिक विवाह धूमधाम से सम्पन्न हुआ जिसमें एक मुस्लिम जोड़े सहित 51 जोड़े जीवनसाथी बने।

संस्थापक कैलाश 'मानव', सहसंस्थापिका कमलादेवी, पूर्व विधानसभाध्यक्ष शांतिलाल चपलोत, वृंदावन के संत छबीले

छैलबिहारी, भगवती शरण महाराज, अणुव्रती गणेश डागलिया, संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल एवं निदेशक श्रीमती वंदना अग्रवाल द्वारा विवाह समारोह का शुभारंभ हुआ।

पद्मश्री कैलाश 'मानव' ने कहा कि दिव्यांग एवं निर्धनजन समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। हम सबका दायित्व है कि समाज व राष्ट्र के चहुंमुखी विकास में अपना योगदान देने के लिए उनका सहयोग करें। जिन निशक्त दिव्यांग भाई-बहिनों के मन में कभी विवाह का विचार भी नहीं आया, उनकी चाह को पंख देकर संस्थान अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

संस्थान ने पिछले 26 विवाहों में 1151 दिव्यांग एवं निर्धन जोड़ों की गृहस्थी बसाने में पहल की है। उन्होंने इस पुण्य कार्य में सहयोगी भामाशाहों व देश के विभिन्न भागों से कन्यादान व आषीर्वाद के लिए आए 1500 से अधिक महानुभावों का आभार व्यक्त किया।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि समारोह में ऐसे जोड़े एक-दूसरे के पूरक बने हैं, जो जन्मजात अथवा दुर्घटनावश नि:शक्तता का दंश झेलते हुए सूनापन महसूस कर रहे थे। जो जोड़े विवाह सूत्र में बंधे हैं, उनमें कोई पांव से तो कोई हाथ से अशक्त है। किसी जोड़े में एक विकलांग है तो दूसरा सकलांग। एक अपनी आंख से देख नहीं सकता तो दूसरा सुन और बोल नहीं सकता। उन्होंने बताया कि ऐसे भी जोड़े हैं, जो घुटनों के बल या घिसट कर चलते हैं, लेकिन अब ये सभी एक-दूसरे के पूरक बनकर खुशनुमा ज़िदंगी की इबारत लिखेंगे।

निदेशक वंदना अग्रवाल ने बताया कि विवाह करने वाले जोड़ों में से अधिकतर के संस्थान में ही नि:शुल्क ऑपरेशन हुए और यहीं उन्होंने आत्म निर्भरता के लिए सिलाई, कम्प्यूटर, मोबाइल सुधार, मेहन्दी इत्यादि का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

कन्यादान के दौरान संस्थान व बाहर से आए अतिथियों द्वारा नवयुगलों को थाली, कटोरी, गिलास, स्टील की कोठी, बर्तन, कुकर, क्रॉकरी, सिलाई मशीन, डीनर सेट, इस्त्री, गैस चूल्हा, बिस्तर, कंबल, बेडशीट्स, तकीया, घड़ी, साड़ियां, पेंट-शर्ट्स, सोने का मंगलसूत्र, कान के टॉप्स, चांदी की पायल, बिछिया, अंगूठी तथा सौंदर्य प्रसाधन सामान प्रदान किया गया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।